

यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ,  
नाशिक



ज्ञानगंगा घरोघरी

STW104

# पटकथा लेखन कार्यपुस्तिका

C123

पटकथा लेखन प्रमाणपत्र

## **STW 104 : पटकथा लेखन कार्यपुस्तिका**

**लेखक : प्रा.राम आशाबाई ठाकर**

### **Contents**

प्रात्यक्षिक १ : पटकथा लेखनाची पूर्वतयारी.....	2
प्रात्यक्षिक २:पटकथा, प्रक्रिया आणि आरंभ .....	9
प्रात्यक्षिक ३: पात्र निर्मिती आणि पात्रांची माहिती नमूद करण्याची पद्धत.....	17
प्रात्यक्षिक ४ : नायक / नायिका पात्राची निर्मिती करणे .....	23
प्रात्यक्षिक ५ : खलनायक/खलनायिका पात्राची निर्मिती.....	34
प्रात्यक्षिक ६ : प्रेम संबंधावर लिहिणे.....	42
प्रात्यक्षिक ७: संवादलेखन .....	51
प्रात्यक्षिक ८ : चित्रपट किंवा टीव्हीसाठी लेखनातील फरक आणि लघुफिल्मसाठी लेखन.....	59
प्रात्यक्षिक ९: संहिता संपादन प्रक्रिया/प्रश्नावली .....	71
प्रात्यक्षिक १० : पुनर्लेखन .....	80
प्रात्यक्षिक ११ : लघु पटकथा: शिक्का आणि स्वयंप्रकाशित व्हा.....	102
प्रात्यक्षिक १२ : लघु पटकथा: देवाला भेद मान्य नाही तर.....	118

## **प्रात्यक्षिक १ : पटकथा लेखनाची पूर्वतयारी**

**उदिष्टे:**

**हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल**

- पटकथा लेखनाची पूर्वतयारी म्हणजे काय हे कळेल
- पटकथा लेखनाची पूर्वतयारी करताना स्वतःला कोणत्या प्रकारचे प्रश्न विचारावेत हे कळेल

**साहित्य:** पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

**विषय संकल्पना:**

**पटकथा लेखन प्रारंभ करण्यापूर्वीची पूर्वतयारी...**

लेखकांनी उत्तम दर्जाच्या पटकथा लिहिण्यासाठी काही पूर्व तयारी करणे आवश्यक असते. यासाठी लेखकांनी स्वतः ला काही प्रश्न विचारून त्या प्रश्नांची उत्तर पटकथेच्या माध्यमातून दिल्यास निश्चित पटकथेचा दर्जा सुधारतो.सृजनशीलता हि प्रत्येकात असते आणि ती सातत्याने अंगीकृत करता येते. सृजनशीलता म्हणजे तरी काय? असा प्रश्न नेहमी प्रत्येकाला असतो.तेव्हा सृजनशीलतेची व्याख्या थोडक्यात अशी करता येईल, “ Solution to problem is creativity”. म्हणजे प्रश्नांना उत्तर देणे म्हणजे सृजनशीलता.तुमच्या मनात जे काही प्रश्न निर्माण होतील

त्याला उत्तर देण्याचा आणि ती उत्तर शब्दबद्ध करीत चला म्हणजे तुमच्यातील प्रतिभेचा शोध घेत घेत तुम्ही सृजनशील लेखक/पटकथाकार होऊ शकतात.

चित्रपट लेखकांनी पटकथा लिहिण्यापूर्वी चित्रपट कथेच्या अनुशंगाणी खालील काही प्रश्नाचा विचार करावा आणि पटकथेला शोभेल अशा उत्तरांनी पटकथेत त्यांचा वापर करावा.

1. आपल्या कथेतील मध्यवर्ती भूमिकेतील पात्राचे नाव काय ?
2. आपण या पात्राची निर्मिती का केली किवा करणार आहात?. प्रेक्षकांना या पात्रामार्फत कोणत्या प्रकारचा प्रसंग किवा कथा आपण पोहऱ्यू इच्छित आहात.
3. कधी आणि केव्हा प्रेक्षक भावनिकरित्या चित्रपटाशी एकरूप होतील?
4. आपल्या कथेसाठी वातावरण/परिस्थिती काय असेल? चित्रपटाचा फॉर्म काय असेल ?
5. चित्रपटातील मुख्य पात्र किवा हिरो/हिरोईन यांना काय हवं आहे? आणि चित्रपटाच्या शेवटी त्यांना ते मिळते कि नाही?
6. पटकथा लिहिण्याआधी किमान सहा महिने चित्रपटाच्या कथेवर काम करा .कथेतील मुख्य पात्रांच्या सुरुवातीच्या भूमिका आणि त्यांना अपेक्षित असलेला शेवट आपण इच्छित आहात त्या नुसार असेल कि तो अनेपक्षित असेल?.
7. हिरोला त्यांच्या ध्येयापासून कोण रोखणार आहे ?
8. मुख्य पात्रांची सुरुवातीची स्थिती काय असेल?
9. पहिल्या १० -१५ पानांमध्येच कथेने प्रेक्षकांची पकड घेतली पाहिजे यासाठी आपल्या उपाययोजना काय असतील ?
10. अंदाजे २७ व्या पानात आपल्या कथेचा चा प्लॉट काय असेल?
11. आपल्या कथेचा मध्य काय असेल ? चित्रपटातील हिरोची स्थिती काय असेल म्हणजे तो

त्याच्या द्येयापासून दूर आहे कि जवळ आहे कि काहीच निश्चित नाही याची माहिती लेखकाला असणे आवश्यक आहे.

12. आपल्या कथेचा भावनिक climax काय असेल ?

13. चित्रपटातील खलनायक किवा विरोधक कोण असेल? त्यांचा आपण का तिरस्कार करणार ? विरोधक केवळ विरोधाला विरोध म्हणून करणार कि त्यांचा अजून काही हेतू आहे म्हणून ते हिरोला विरोध करणार ?

14. खलनायक कोणत्या पाश्वभूमीचा आहे? त्याचं आणि हिरोच्या परिस्थितीतील तुलनात्मक फरक ? विशेषत: त्यांच्या संवादातील फरकाबाबत माहिती द्यावी.

15. या कथेतील सर्वात आपल्याला आवडत असणारी गोष्ट कोणती? आणि खरोखरच ती इतर कोट्यावधी लोकांनाही आवडेल का ?

16. प्रेक्षकाच्या सुरुवात, मध्य आणि शेवटच्या भावना काय असतील? त्यांच्या साठी असलेल्या भावनिक प्रवासाचे योग्यप्रमाणात नियोजन विशद करा.

#### कृती:

- पटकथा लेखन पूर्वतयारीसाठी स्वतःला विचारण्यात येणाऱ्या कोणत्याही किमान पाच प्रश्नांचा अभ्यास करा आणि त्यावर आधारित विश्लेषण आपल्या शब्दात लिहा .

प्रश्न १ :

---

---

---

---

---

विश्लेषण :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

प्रश्न २ :

---

---

---

---

---

---

---

---

विश्लेषण :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

प्रश्न ३ :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**विश्लेषण :**

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**प्रश्न ४ :**

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**विश्लेषण :**

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**प्रश्न ५ :**

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**विश्लेषण :**

---

---

---

---

---

---

---

---

---

2. तुम्ही एका चित्रपटासाठी पटकथा लिहिणार आहात असा विचार करा आणि चित्रपटातील खलनायक किंवा विरोधक कोण असेल? त्यांचा आपण का तिरस्कार करणार? विरोधक केवळ विरोधाला विरोध म्हणून करणार कि त्यांचा अजून काही हेतू आहे म्हणून ते हिरोला विरोध करणार? यावर भाष्य करा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

- 
- 
- 
- 
3. आपण चित्रपटातील प्रेक्षकांच्या भावना समजावून घेण्यासाठी एक भावनाप्रधान चित्रपट बघा आणि चित्रपटाची कथा सुरुवात, मध्य आणि शेवट यात प्रेक्षकांच्या भावना काय होत्या याचे वर्णन थोडक्यात करा .
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 

**अवलोकन :**

**निष्कर्ष :**

**मूल्यमापन :**

## प्रात्यक्षिक 2: पटकथा, प्रक्रिया आणि आरंभ

### उदिष्टे:

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल

- पटकथा व्याख्या
- पटकथा प्रक्रिया आढावा आणि
- पटकथेची सुरुवात कशी करावी

साहित्य: पेन, कागद,(संगणक/ Laptop)

### विषय संकल्पना:

पटकथा म्हणजे काय? याविषयी अनेक व्यावसायिक चित्रपट निर्माण करणाऱ्या विचारवंतानी वेगवेगळ्या व्याख्या केलेल्या आहेत. त्यातील काही व्याख्या या ठिकाणी आपण बघू या.

अलन अरमेर (Alen Armer) : “चित्रपटाची ब्लूप्रिंट म्हणजे पटकथा होय”

सिड फील्ड (Syd Field) : “चित्रांच्या माध्यमातून कथा सांगणे ”

पौल श्रडेर ( Paul Schrader) : “कलेच्या कार्यात एकमेकांच्या सहायाने संयुक्तपणे काम करण्यासाठीचे निमंत्रण. यात तीन बाबींचा सहभाग असतो- कल्पना, पात्र, रचना”

लुइस नोव्रा (Louis Nowra ) : “दिग्दर्शकांची ब्लूप्रिंट म्हणजे पटकथा. पटकथा हि कला नसून एक संयुक्तपणे केलेली प्रक्रिया असते”.

विलियम गोल्डमन (William Goldman): “पटकथा म्हणजे रचना होय”.

विकी किंग (Viki King) : “पटकथा म्हणजे २१ दिवसात निर्माण होणारा दस्तऐवज होय”.

**लिंडा सेगर (Linda Seger):** “पाच बाबी म्हणजे पटकथा: कथानिवड, पात्र, कल्पना विस्तार,चित्र आणि संवाद”.

**लिंडा आरोन्सेन (Linda Aronson):** “पटकथा म्हणजे या प्रक्रियेत सहभागी प्रत्येकासाठीची तंत्रशुद्ध मार्गदर्शक पुस्तिका होय”.

### **पटकथा मसुदा/पटकथा संहिता:**

पटकथाकाराने पटकथा लिहून पूर्ण झाल्यानंतर पटकथा संहिता निर्माता, दिग्दर्शक, कलाकार, प्रोडक्शन होऊसेस इत्यादीकडे दिल्या जाते. पटकथा संहिता शक्यतो A4 साईज पेपरवर दोन्ही बाजूना पुरेसा समास सोडून टाईप केलेली असते. साधारणता: संहितेत ६० ते ८० दृश्य किवा १०७ ते १२० पाने असतात. पटकथा व्यवस्थित टाईप करून घ्यायला हवी ज्यामुळे समोरच्याला वाचताना त्रास होणार नाही. पटकथा लिहिण्यापूर्वी किवा लिहिल्यानंतर स्क्रीन रायटर्स असोसिएशन कडे नोंदणी करून घ्यावी जेणेकरून तिची कोणी चोरी करणार नाही.

### **पटकथा निर्मिती प्रक्रिया आढावा**

#### **संकल्पना ते पटकथा प्रवास:**

चित्रपटासाठी पटकथा लिहिताना खालील मुख्य पायऱ्या किवा दस्तऐवजाचा समावेश होतो.

#### **संकल्पना:**

**संकल्पना:** एक ते तीन वाक्यात मुख्य पात्र आणि त्यांच्या भूमिकेविषयीची माहिती म्हणजे संकल्पना , यालाच premise असे म्हणतात

**सिनोप्सीस:** हा तीन परिच्छेदचा असून यात कथेच्या सुरुवात, मध्य आणि शेवट या बदल माहिती असते.

**आराखडा** : एक किवा तीन पानांमध्ये मांडणी .विकास आणि पात्रांची भूमिका आणि त्यांच्या बहयारुपाबद्दल माहिती दिलेली असते.

**मुख्यपात्राची माहिती** : मुख्य पात्राबाबत एक ते तीन पानामध्ये त्यांच्या भूमिकेबाबत माहिती दिलेली असते.

**पीच दस्तावेज** : यात वरील सर्व दस्तऐवजाचा समावेश असतो.

**दृश्य विभागणी** : यात प्रत्येक सीनमधील मुद्र्यांची यादी असते.प्रत्येक सीनसाठी इंडेक्स कार्डचा वापर केलेला असतो.

**विस्तारित माहिती** २० ते ४० पानामध्ये प्रत्येक सीन ,त्यातील पात्र ,संवादरहीत कथा विषयी थोडी विस्ताराने माहिती देण्यात येते.

**संवाद** मुख्य पात्राने बोलावयाची एक पानभर संवाद देण्यात येतात ज्यामुळे कथेतील शैलीबद्दल जाणीव होते.

**पटकथा** पटकथा संहिता शक्यतो A4 साईज पेपरवर दोन्ही बाजूना पुरेसा समास सोडून टाईप केलेली असते. साधारणता: संहितेत ६० ते ८० दृश्य किवा १०५ ते १२० पाने असतात.

### **पटकथेची सुरुवात कुठून करावी**

पटकथाकाराला नेहमी पडलेला प्रश्न म्हणजे पटकथेची सुरुवात कुठून करावी ? पटकथा लिखानासाठी अनेकजण एका विशिष्ट रचना लक्षात घेवून लिहायला सुरुवात करतात. पण पटकथा लेखन तुम्ही कुठूनही सुरुवात करू शकतात जसे तुम्हाला एखादी छान कल्पना सुचली किवा तुम्हाला एखादे वेगळे नाविन्यपूर्ण पात्र भेटले किवा एखाद्या प्रसंगावरूनही तुम्हाला पटकथा

लिहिता येवू शकते. पटकथाकाराला एखादी नाविन्य पूर्ण कल्पना सुचणे, कथेतील मध्यवर्ती पात्र किंवा एखाद्या घटनाक्रम यावरुनही पटकथा विस्तार करता येते. विनोदी, गंभीर, साहसी, गुन्हेगारी, रोमांटिक अशा कोणत्याही प्रकारावर लेखक पटकथा लिहिण्यास निवडू शकतो आणि आपली पटकथा पूर्ण करू शकतो. त्याने ठरविलेल्या विषयावर पटकथे साठी त्याला विविध मुख्य पात्र, विरोधी पात्र इत्यादीचा व्यवस्थित विचार करून त्यांना कथेत योग्य न्याय दयावा लागतो.

### कृती:

४. आपण किमान पाच पटकथा व्याख्यांचा अभ्यास करा आणि त्या व्याख्याना अभिप्रेत असलेले विश्लेषण आपल्या शब्दात लिहा .

व्याख्या १ :

---

---

---

---

---

---

---

विश्लेषण :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

व्याख्या २ :

---

---

---

---

---

---

---

विश्लेषण :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

व्याख्या ३ :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

विश्लेषण :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

व्याख्या ४ :

---

---

---

---

---

---

---

विश्लेषण :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

व्याख्या ५ :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**विश्लेषण :**

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

५. तुम्ही एका चित्रपटासाठी पटकथा लिहिणार आहात असा विचार करा आणि त्या चित्रपटाची संकल्पना लिहा .

---

---

---

---

---

---

---

---

६. आपणास आवडलेल्या कोणत्याही दोन चित्रपटाची सुरुवात कशा प्रकारे करण्यात आलेली आहे याबदल माहिती द्या आणि त्यावर स्वतःचे मत नोंदवा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**अवलोकन :**

**निष्कर्ष :**

**मूल्यमापन :**

## **प्रात्यक्षिक 3: पात्र निर्मिती आणि पात्रांची माहिती नमूद करण्याची पद्धत**

### **उदिष्टे:**

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल .

- पात्र निर्मितीतील मुख्य घटक समजतील ,
- भारतीय चित्रपटातील काही महान पात्रांची उदाहरणे कळतील
- पात्रांची वर्णन नमूद करण्याची पद्धत कळेल

**साहित्य:** पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

**विषय संकल्पना:**

**पात्र :**

चित्रपट पटकथेत पात्रांना अन्य साधारण महत्व आहे. अनेक वेळा चित्रपटातील पात्र महत्वाची की चित्रपटाची संकल्पना यावर मतभिन्नता आढळून आली आहे. पण लेखकाच्या दृष्टीने चित्रपटाची संकल्पना महत्वाची असून संकल्पनेनुसार पात्राची निर्मिती होत असते. असे असले तरी पात्रांना दुय्यम स्थान देण्यात आले आहे असे मात्र अजिबात नाही. पटकथेत पात्र काय कृती करीत असतात याला ते काय बोलतात या पेक्षा जास्त महत्व देण्यात येते. पात्रांनी आपल्या कृतीतून पटकथेला न्याय देणे अपेक्षित आहे. यासठी पटकथाकाराला कथेच्या गरजेनुसार पात्रांची निर्मिती करावी लागते. लेखक मुख्य पात्रांची निर्मिती करित असताना खालीली मुख्य घटकांचा विचार करतो .

१. **शारीरिक :** पात्र कशा प्रकारे दिसेल. यामध्ये पात्र पुरुष आहे की स्त्री की अन्य काही, पात्रांची शरीरिक ठेवण जसे वजन, उंची, वय, रंग, आवाज, केस रचना, आरोग्य, भाषा इत्यादीचा विचारासोबतच पात्राच्या ड्रेस किवा वेशभूषेचा विचार लेखकाला करावा लागतो.

**२. सामाजिक :** पात्राचा सामाजिक वावर कसा असेल. यामध्ये पात्राच्या वैवाहिक स्थिती, पात्राची कौटुंबिक पार्श्वभूमी, पात्राची भौगोलिक परिस्थिती म्हणजे तो शहर, गाव, डॉंगराळ प्रदेश इयादी कोणत्या भागातील आहे, पात्राचा व्यवसाय, धर्म, त्याचे राजकीय आणि क्रिडा क्षेत्रातील ज्ञान किवा त्याचा कल कशात आहे, त्याचे सामाजिक मूल्य म्हणजे समाजात त्याचे स्थान कसे आहे, त्याची एखाद्या विषयातील प्रगल्भता, त्याच्यातील क्षमता किवा त्याच्या महात्वकांक्षा इत्यादीचा लेखकाला विचार करावा लागतो.

**३. मनोवैज्ञानिक :** पात्र कथेत कशा प्रकारे वागेल किवा वर्तन करेल. ते नकारात्मक भूमिकेत असेल की सकारात्मक, त्याला आवडणाऱ्या व न आवडणाऱ्या गोष्टी, त्याला कोणत्या गोष्टीचा फोबिया किवा भीती वाटते का कि अन्य मनोवैज्ञानिक बाबीचा लेखकाला कथेतील गरजेनुसार पात्राच्या निर्मितीसाठी अभ्यास करावा लागतो.

#### **भारतीय चित्रपटातील काही महान पात्रांची उदाहरणे :**

भारतीय चित्रपटातील काही अविस्मरणीय पात्र जी अनेक वर्षांपासून आपल्या भुमिकेमुळे कायमची आपल्या लक्षात राहतात. अशा पात्रांचा समाज मनावर अनेक वर्ष परिणाम टिकून राहतो. पटकथाकाराने अशा महान पात्रांचा बारकार्झने अभ्यास करायला हवा आणि आपल्या पटकथेत अशा प्रकारच्या पात्रांचा कथेच्या निकडीनुसार निर्मितीचा प्रयत्न करावा. भारतीय चित्रपटातील काही अविस्मरणीय पात्रांत प्रामुख्याने खालील पात्रांचा समावेश होतो.

शोले चित्रपटातील गब्बरसिंग,

मि.इंडियातील मोक्याम्बो,

शहेनशहा चित्रपटातील शहेनशहा, इत्यादी

**पटकथेतील पात्रांचे वर्णन / माहिती नमूद करण्याची प्रचलित पद्धत खालील प्रमाणे असते.**

चित्रपटाच्या पटकथेत पात्रांची माहिती किवा वर्णन करताना त्या मध्ये पात्राचे नाव,वय, शारीरिक स्वरूप , राष्ट्रीयत्व,मनोवैज्ञानिक माहिती आणि पात्रांची इतर बाह्य रूपाबदल माहितीचा समावेश असतो. उदाहरणादाखल आपण खाली दिलेल्या नमुन्यातील पद्धतीचा अभ्यास करावा आणि पटकथा लिहिताना पात्रांची माहिती देण्यासाठी या नमुन्याचा (TEMPLATE) चा उपयोग करावा. भारतातील अनेक नामवंत लेखक प्रादेशिक भाषेत लिखाण करताना किवा राष्ट्रीय भाषेत लिखाण करताना पात्रांच्या राष्ट्रीयत्वाबाबत उल्लेख करताना दिसत नाहीत.

---

**उदाहरणार्थ :करिष्मा , विशीतील , सुंदर, निळाशार डोळ्यांची , महाराष्ट्रीयन, गर्भश्रीमंत घराण्यात जन्म, तिचे वडील प्रसिद्ध उद्योजक तर आई मॉडेल आहे. श्रीमंतीत वाढल्याने ती प्रेमात विश्वास ठेवत नाही. तील गाण्याची आवड असते आणि तिलाही आईसारखे मॉडेल होण्याची इच्छा आहे.**

---

**कृती:**

**१. पात्र निर्मितीतील मुख्य घटक कोणते? प्रत्येकाची थोडक्यात माहिती लिहा.**

**उत्तर :**

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

2. पात्र निर्मितीच्या घटकांवर आधारित एक पुरुष व एक स्त्री पात्र विकसित करा आणि ती पात्र वर्णन नमुन्यात (Template) मांडा.

पुरुष पात्र :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**स्त्री पात्र :**

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

३. तुम्हाला आवडलेल्या कोणत्याही दोन मराठी चित्रपटातील पात्रांची नावे लिहा आणि ती का आवडली याबद्दल पात्र निर्मितीतील मुख्य घटकांच्या आधारे विश्लेषण करा.

१. \_\_\_\_\_

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

२.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

अवलोकनः

निष्कर्षः

मूल्यमापनः

## **प्रात्यक्षिक ४ : नायक / नायिका पात्राची निर्मिती करणे**

**उदिष्टे:**

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल

- नायक/नायिकाच्या पात्राची माहिती कळेल .
- नायक/नायिका पात्र निर्मितीसाठीच्या घटकांची माहिती कळेल .

**साहित्य:** पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

**विषय संकल्पना :**

कोणत्याही चित्रपटाच्या पुर्णत्वासाठी नायक आणि खलनायक या पात्रांची निर्मिती केली जाते. नायक हा बहुतांश वेळा नेहमी सकारात्मक पद्धतीने सादर केला जातो तर खलनायकाला नकारात्मक भूमिकेत दाखविण्यात येते. खलनायक हेही नायकाइतकेच महत्वपूर्ण पात्र असून चित्रपटातील संघर्ष निर्मितीसाठी ते पात्र आवश्यक असते. नायक आणि खलनायक तशा अर्थाने म्हटले तर क्रिया आणि प्रतिक्रिया अशा पद्धतीने चित्रपटाची कथा पुढे पुढे नेत असतात. दोन्ही पात्र निर्मिती करणे आणि त्या सक्षमतेने त्यांना पडद्यावर दाखविण्याची कसब पटकथाकाराकडे असावी लागते. या प्रकरणात आपण नायक या पात्राची निर्मिती करण्यासाठी लेखकांनी कोणत्या बाबीचा विचार केला पाहिजे याचा अभ्यास करणार आहोत.

**नायक/नायिका पात्राची निर्मिती :**

नायक हे चित्रपटातील मुख्य पात्र असते. नायक चित्रपटात नेहमी सकारात्मक पद्धतीचे कार्य करीत असल्याने प्रेक्षकाचा त्याच्याकडे पाहण्याचा दृष्टीकोन नेहमी खलनायकाच्या तुलनेत चांगला

असतो. त्यामुळे साहजिकच पूर्ण चित्रपटभर जेव्हा जेव्हा नायक पडद्यावर असतो तेव्हा तेव्हा प्रेक्षकांना नायकाकडून अनेक अपेक्षा असतात. प्रेक्षकांच्या अपेक्षापूर्तीसाठी नायकाला चांगल्या पद्धतीने सादर करण्याचे काम लेखकाकडे असते. त्यामुळे लेखकाने एका सक्षम आणि वास्तववादी वाटणाऱ्या नायक किंवा नायिकेची निर्मिती केली पाहिजे. नायकाची निर्मिती करीत असताना लेखकाने एक तर प्रथम खलनायकाचे पात्र आधी निर्माण करावे किंवा खलनायकाच्या पात्राचा सखोल अभ्यास करून मगच नायक पात्राची निर्मिती केल पाहिजे. अनेकांना हे कदाचित प्रथमतः पटणार नाही पण कालांतराने त्यांना खलनायक पात्र आधी निर्माण केल्याचे अनेक फायदे जाणवतील. चित्रपटातील संघर्ष उत्कंठावर्धक करायचा असेल तर खलनायकाचे पात्र महत्वपूर्ण भूमिका निभावत असते आणि त्या संघर्षात यशस्वी होण्यासाठी नायक हा खलनायकाच्या पात्रापेक्षा सरस असला पाहिजे. अनेक चित्रपट बघताना आपल्या असे लक्षात येते की , लेखकाने नायकाच्या पात्र उभारणीसाठी खूप कष्ट घेतल्याले असतात .पण खलनायक पात्राकडे अक्षम दुर्लक्ष केलेले असते. चित्रपटात केवळ खलनायक पाहिजे म्हणून निर्माण केलेले हे पात्र सपशेल अपयशी ठरते आणि परिणामत : चित्रपट कथा रुक्ष वाटते आणि प्रेक्षकांच्या पसंतीला उतरत नाही.त्यामुळे नायकाच्या आधी खलनायकाच्या पात्राची निर्मितीसाठी लेखकाने पसंती द्यावी.

नायक पात्र निर्मितीसाठी खालील नायकाशी संबंधित घटकांचा विचार करण्यात यावा आणि कथेला अनुसरून नायक/नायिका पात्राची निर्मिती करण्यात यावी.

### पात्रांचा इतिहास :

प्रत्येक व्यक्तीला एक इतिहास असतो. मग तो श्रीमंत होण्यासाठीचा असो कि एखाद्या क्षेत्रात प्रसिद्ध होण्याचा.उदाहरणार्थ, भारताचे माजी राष्ट्रपती डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम यांचा सामान्य व्यक्ती ते राष्ट्रपतीपदापर्यंतचा प्रवासाचा इतिहास, अमिताभ बच्चन यांचा फिल्म

सुपरस्टारपदापर्यंत पोहचण्याचा इतिहास, महेंद्रसिंग धोनी यांचा क्रिकेट संघाचा कप्तान आणि विश्व चषक जिंकण्यापर्यंतच्या प्रवासाचा इतिहास इत्यादी. त्यामुळे लेखकाने नायकाचे पात्र निर्माण करण्यासाठी नायकाला एक पाश्वे इतिहास असला पाहिजे आणि त्या इतिहासावर आधारित सत्याच्या जवळ जाईल अशा नायकाच्या पात्राची निर्मिती करावी. इतिहास हा त्या पात्राचा आरसा असतो आणि तो त्या पात्रांनी भूतकाळात केलेल्या कार्याचा किंवा कृतीचा आढावा घेत असतो. इतिहासामुळे पात्राबदलचे मत बनविण्यासाठी प्रेक्षकांना आधार मिळतो.

पात्राची माहिती देणाऱ्या प्रपत्रात इतिहास देणे उपयुक्त ठरते. नायकाच्या बालपणावर एक परिच्छेद देण्यात यावा जेणेकरून त्या पात्राचा इतिहास समजावून घेणे निर्माता/दिग्दर्शकाला सोपे होईल.

#### ६येय आणि हेतू:

चित्रपटातील निर्माण करण्यात येत असलेल्या नायकाचा चित्रपटातील संघर्ष कोणत्या ६येयांनी प्रेरित आहे आणि त्यामागचा त्याचा शुद्ध हेतू काय आहे हे पटकथाकाराला स्पष्टपणे माहिती असणे आवश्यक आहे. पात्राचा ६येय आणि हेतू स्पष्ट असेल तर पात्राचा संघर्षमय प्रवास आणि त्या ६येयाच्या प्राप्तीसाठी अडसर ठरणारे इतर घटक ,रोमान्स, थील्लर, रहस्यमयता इत्यादीचा सुबक नियोजन आणि वापर करून चित्रपट आकर्षक , अर्थपूर्ण आणि मनोरंजनात्मक करणे सुकर होते. उदाहरणार्थ, चित्रपटातील पात्राला एखाद्या राजवाड्यातील सत्ता हस्तगत करणे हे ६येय होऊ शकते. राजवाड्यातील संपती मिळवणे हा राजवाडा हस्तगत करण्यामागील वैकितक हेतू पात्राचा असू शकतो किंवा त्याने त्याच्या प्रेयसीला किंवा पत्नीला दिलेले वचनपुर्तीचा किंवा राजकन्येशी विवाह करण्याचा त्याचा त्यामागील हेतू असू शकतो. याठिकाणी आपणास अधिक

माहिती व्हावी म्हणून हेतूच्या अनेक शक्यता देण्यात आल्या आहेत पण जेव्हा आपण नायकाचे पात्र लिहित असाल तेव्हा आपणाला पात्राच्या स्पष्ट हेतूची माहिती असणे आवश्यक आहे. ध्येय हे उदात असावे तर हेतू हा वैकितक असू शकतो.

#### **सहभाग :**

नायकाचा चित्रपट सीन मधील सहभाग हा केवळ योगायोग या प्रकारात नसावा आणि तो अतिरेक होईल अशाप्रमाणातही नसावा. नायकाचा प्रत्येक सीनमधील वावर हा ध्येय आणि हेतूशी संबंधित असावा. ज्या प्रसंगात नायकाचा सहभाग आवश्यक असेल त्या प्रसंगात नायक पात्राला योग्य न्याय देण्यात यावा. बऱ्याच वेळा असेही होतेकी, सुरुवातीला नायकाबद्दल असलेला प्रेक्षकांचा विश्वास पुढे पुढे कमी होत जातो. त्यामुळे लेखकाने प्रेक्षकांच्या विश्वासाला तडा जाणार नाही अशा प्रकारे नायक पात्राची निर्मिती करताना काळजी घ्यायला हवी.

#### **बदल :**

नायकाला सुरुवातीला सांगितल्याप्रमाणे सकारात्मक भूमिकेत दाखविण्यात येते. पण या ठिकाणी लेखकाने पटकथा लिहिताना नायकाची सकारात्मक भूमिका याचा अर्थ नायकाची ताठर भूमिका असा घेवू नये. अनेक वेळा नायकाने ठरविलेले ध्येय आणि हेतू सांध्य करताना त्याला अनेक प्रसंग आणि अनुभवातून जावे लागते. त्याच्या या प्रवासात कधी कधी त्याला वेगळ्या गोष्टीचा साक्षात्कार होऊ शकतो. सुरुवातीला त्याने जी गृहीतके विचारात घेतली होती ती कदाचित काळाच्या कसोटीवर खरी ठरणारी नसतील अशा वेळेला त्याला स्वतः मध्ये बदल घडविणे आवश्यक असते. असे बदल कोणते असू शकतात याचा अभ्यास पटकथाकाराने करावा आणि पात्रांना चित्रपट कथानकाच्यावृष्टीने बदल हवा असल्यास पात्रामध्ये बदल घडविण्यासाठी

आवश्यक त्या ठिकाणी बदल करावेत. पण हे सर्व करीत असताना मूळ कथानक भरकटत जाणार नाही याची काळजीही घ्यावी.

### संबंध :

नायक हे चित्रपटातील मुख्य पात्र असल्याने नेहमी त्याला सकारात्मक आणि ध्येयाच्या मागे दाखविण्यात येत असले तरी तो नायक सामान्य वाटला पाहिजे. तो रोबोट सारखा वाटू नये. रोबोट हा दिलेले काम तडीस नेर्झल पण त्याच्यातील भावनारहित हालचाली प्रेक्षकांना कालांतराने नकोशा वाटायला लागतील अगदी तसेच आपल्या नायकाच्या बाबतीत सूदधा होऊ शकते. म्हणून सामान्य व्यक्तीला नायक हा आपल्यातील वाटला पाहिजे यासाठी लेखकाने कसोशीने प्रयत्न केला पाहिजे. सामान्य व्यक्तीच्या आयुष्यात ज्याप्रमाणे नकारात्मक घटना घडत असतात, यश आणि अपयशाची चव चाखावी लागते त्याप्रमाणे नायकाच्या आयुष्यातही काही प्रसंग दाखविण्यात यावेत. यासाठी नायकाच्या आयुष्यात काही मित्र मैत्रणी, शेजारी, बालपणीच्या काही आठवणी इत्यादीचा समावेश करावा आणि त्यांच्या संबंधातून नायकातील नकारात्मक व सकारात्मक बाबी, त्याला आवडणाऱ्या, न आवडणाऱ्या गोष्टी इत्यादी दाखविण्यात याव्यात. सर्व सामान्य व्यक्तीला आयुष्य जगताना ज्या भावना असतात त्या भावना या संबंधातून नायकाबाबत निर्माण केल्या गेल्यास नायक हा सत्य व वास्तववादी वाटायला लागेल आणि त्याने चित्रपटात व्यक्त केलेले विचार प्रेक्षकांना आपले वाटायला लागू शकतात. अशा पात्रामुळेही प्रेक्षकांची नाळ कथानकाशी जोडली जाण्याची शक्यताही अधिक असते.

**कृती:**

१. आपण किमान दोन पटकथा संहितेचा अभ्यास करा आणि त्यातील मुख्य नायका/नायिकाशी संबंधित उपर्युक्त घटकांच्या आधारे विश्लेषण आपल्या शब्दात लिहा .

संहिता १ : संहितेचे नाव :—————

---

---

---

विश्लेषण :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

संहिता २ : संहितेचे नाव :—————  
\_\_\_\_\_  
\_\_\_\_\_

विश्लेषण :  
\_\_\_\_\_  
\_\_\_\_\_

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**अवलोकन :**

**निष्कर्ष :**

**मूल्यमापन :**

## **प्रात्यक्षिक ५ : खलनायक/खलनायिका पात्राची निर्मिती**

**उदिष्टे:**

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल

- खलनायक/खलनायिकाच्या पात्राची माहिती कळेल .
- खलनायक/खलनायिका पात्र निर्मितीसाठीच्या घटकांची माहिती कळेल .

**साहित्य:** पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

**विषय संकल्पना:**

चित्रपटातील खलनायक हा चित्रपटातील नायकाइतकाच महत्वपूर्ण आहे असे म्हटले तर ते चुकीचे ठरणार नाही. कारण खलनायक नायकाला त्याच्या ध्येय आणि हेतू मिळविण्याच्या वाटेतील मुख्य अडसर असतो. खलनायकाचा नायकाला होत असलेल्या विरोधातून संघर्ष निर्माण होतो आणि हा संघर्ष चित्रपट कथानक पुढे नेण्यासाठी महत्वपूर्ण ठरतो. खलनायक हे पात्र नकरात्मक प्रकारात येत असले तरी ते निर्माण करतानाही नायकपात्र निर्मितीसाठी ज्याप्रमाणात अभ्यास आणि मेहनत घेतली होती त्याच प्रमाणे याही ठिकाणी लेखकाने प्रयत्न करावेत. खलनायकी पात्र अगदी अविश्वसनीय, अवास्तववादी आणि कंटाळवाणे होणार नाही याची खबरदारी लेखकाने घेणे गरजेचे असते. खलनायक म्हणजे एखादी व्यक्तीच असली पाहिजे असे काही नाही. खलनायक म्हणजे नकरात्मक भूमिका बजावणारा कोणीही व्यक्ती, प्राणी, पक्षी, निसर्ग, इत्यादी असू शकतात. या प्रकरणात आपण खलनायक या पात्राची निर्मिती करण्यासाठी लेखकांनी कोणत्या बाबींचा विचार केला पाहिजे याचा अभ्यास करणार आहोत.

### **प्रथम खलनायक पात्राची निर्मिती करणे :**

प्रथमतः लेखकाने खलनायक पात्राची निर्मिती करावी आणि त्यानंतर नायक पात्राची निर्मिती करावी. या ठिकाणी हेही सतत लक्षत घेतले पाहिजे की , नायकाइतकंच महत्व खलनायक पात्रालाही देणे आवश्यक आहे. खलनायक हा नायकाच्या द्येय प्राप्तीतील मोठा अडसर असतो. खलनायकाच्या विरोधी भूमिकेतून संघर्ष निर्माण होतो आणि या संघर्षातून कथानक पुढे जाण्यास सहाय मिळते. बज्याचदा खलनायकासोबत अन्य विरोधक पात्राची निर्मिती केली जाते. मुख्य खलनायक पात्र लिहिताना जी काळजी घेतली जाते तीच काळजी इतर विरोधी पात्र लिहिण्यासाठीही घेतली पाहिजे. काही लेखक नायकाचे पात्र निर्मितीवर अधिक भर देतात आणि खलनायकाच्या पात्र निर्मितीकडे अक्षरशः दुर्लक्ष केलेले असते. केवळ खलनायक हवा म्हणून निर्माण केलेले खलनायकी पात्र चित्रपटातील संघर्षात जिवंतपणा आणू शकत नाही परिणामी केवळ नायक पात्र चित्रपट कथानकाला योग्य न्याय देवू शकणार नाहीत. त्यामुळे चित्रपटाची गरज लक्षात घेता खलनायक पात्र आणि त्याचा दर्जा राखणे कथाकाराला आवश्यक आहे.

### **खलनायक/विरोधी पात्रांचा अभ्यास करणे:**

खलनायक पात्र निर्माण करण्यासाठी लेखकाने स्वतः ला या पात्रासबंधित प्रश्न विचारले पाहिजेत जसे-

विरोधी पात्र कोण/काय आहे?

विरोधी पात्राचा ध्येय काय आहे?

विरोधी पात्राचा हेतू काय आहे?

ध्येय आणि हेतू साध्य करण्यासाठी ते काय करतील? त्यांचा संघर्ष कसा असेल?

त्यांचा संघर्ष नायकाच्या ध्येय व हेतुत कसा व्यत्यय आणेल?

नायकाशिवाय खलनायकी पात्राचा इतर पात्रांवर कसा परिणाम करतील?

चित्रपटातील एकूण परिस्थितीवर त्याचा कसा परिणाम होईल.

नायक व खलनायक यांच्या ध्येय व हेतूची तुलना करणे :

नायक व खलनायक यांच्या ध्येयामध्ये परस्परविरोधी संघर्ष खालील तीन परिस्थितीत होऊ शकतो.

१. नायकाचे ध्येय खलनायकाला त्याच्या ध्येयातील मोठा अडथळा निर्माण करील तेव्हा,
२. खलनायकाचे ध्येय नायकाला त्याच्या ध्येयातील मोठा अडथळा निर्माण करील तेव्हा,
३. नायक आणि खलनायक यांचे दोघांचेही ध्येय सारखी आहेत पण ते मिळवण्याच्या पद्धती भिन्न असतील तेव्हा.

वरील तीन परिस्थितीपैकी क्रमाक तीनची परिस्थिती नायक आणि खलनायक यांच्यात मोळ्याप्रमाणात संघर्ष निर्माण करू शकते आणि म्हणून अनेक पटकथाकार यास प्राधान्य देताना दिसतात.

### **खलनायकाला हिरो बनविणे:**

खलनायकाला हिरो बनविणे म्हणजे त्याला चांगला माणूस बनविणे असे नाही . प्रत्येक व्यक्ती मग कोणी का असेना वाईट कृत्य करीत असेल तर त्याचा विरोध करणे आवश्यक असते पण असे कृत्य करणाराला तो जे करीत असतो ते कधी वाईट वाटत नाही. जसे की हिरो खलनायकाच्या साम्राज्यावर हल्ला चढवीत आहे आणि खलनायक काहीच करीत नाही असे होणार नाही .आपल्या साम्राज्यातील लोकांचा बचाव करण्यासाठी खलनायक नायकाचा विरोध करेल आणि युद्धही करेल. खलनायकाला कदाचित हे करणे आवडणार नाही पण त्याला युद्धाशिवाय पर्याय उपलब्ध नसेल तर त्याला ते करावे लागेल.अशा परिस्थिती साम्राज्यातील जनतेला खलनायक हा त्यांचा हिरो वाटायला लागेल.पटकथाकाराने खलनायक पात्र वास्तववादी वाटले पाहिजे अशा रीतीने त्याची निर्मिती करणे आवश्यक आहे. खलनायकी पात्राचा संघर्ष अतिरंजित किवा अतिशयोक्ती वाटणार नाही याचीही खबरदारी लेखकाने घ्यावी.

### **खलनायकाला नायकाच्या तोडीस्तोड बनविणे:**

नायकाला सकारत्मक दाखविण्यासाठी ज्या पद्धतीने त्याच्या आवडी निवडी, त्याचे मित्र/मैत्रणी , त्याला आवडणारे खाद्य पदार्थ इत्यादीचा विचार करण्यात येतो त्याच पद्धतीने खलनायकाच्या पात्राला न्याय देण्यासाठीही विचार करण्यात यावा. खलनायक सुद्धा माणूस असतो हे दाखविण्यासाठी याची आवश्यकता असून सक्षम खलनायकाचे पात्र निर्माण झाले तरच कथा संघर्षमय होईल.

## **कथानक संकल्पना समजावून घेणे :**

खलनायक हा नायकाच्या वाईट विचारांचे प्रतिबिंब असते.ते नायकाच्या वाईट रहस्य,भीती आणि नैतिकतेचे प्रतिनिधित्व करीत असतात हे वाक्य दोघांतील संघर्षाला मोठा आयाम देण्यासाठी फार उपयुक्त ठरते .आपली कथा प्रभावशाली होण्यासाठी अशा काही नायकाबाबतच्या गोष्टीचाही विचार करण्यात यावा. परदेशी चित्रपटात अशा नायक विरोधीघटनांचाही मोठ्याप्रमाणात वापर करण्यात येतो. कथेत ट्रीस्ट साठी हे गरजेचे असते.कथा संकल्पना समजावून घेवून खलनायक पात्र लिहिल्यास ते अधिक प्रभावशाली ठरते.संकल्पनेनुसार पात्राला आकार देणे सहज शक्य होते आणि संकल्पनेनुसार पात्राची निर्मिती करण्यात यावी.

## **खलनायकाला चेहरा देण्याचा प्रयत्न करावा:**

आपण पूर्वी म्हटल्याप्रमाणे खलनायक कोणीही असू शकतो जसे वादळ, झाड,पक्षी,प्राणी इत्यादी. भुतांच्या चित्रपटात वादळ, धवनी इत्यादींना खलनायक म्हणून दाखविण्यात येते.पण अशा अदृश्य खलनायकाचा प्रभाव जास्त काळ पडद्यावर टिकत नाही. म्हणून अशा प्रभावासाठी खलनायकी पात्राला चेहरा देणे आवश्यक असते. खलनायकाला चेहरा दिल्यास तो निर्माण करीत असलेल्या संघर्षाची प्रेक्षकाला जाणीव होते आणि त्यामुळे नायाकातील क्षमतेबाबतही पुरेशी कल्पना येते आणि त्याला चित्रपट बघताना उत्साह निर्माण होतो.

**काही ग्रेट खलनायक : मि. इंडियातील मोक्याम्बो , शोलेतील गब्बरसिंग इत्यादी.**

कृती:

७. खलनायक पात्र निर्माण करण्यासाठी लेखकाने स्वतः ला पात्रासंबंधित कोणते प्रश्न विचारले पाहिजेत? प्रत्येक संघर्ष हा चित्रपटाचे कथानक पुढे नेण्यास कशाप्रकारे सहायभूत होईल यावर आपले मत नोंदवा.
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
-

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

c. खालील विषयी थोडक्यात आपल्या भाषेत माहिती लिहा

अ . खलनायकाला हिरो बनविणे ब. खलनायकाला चेहरा देण्याचा प्रयत्न करावा

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**अवलोकन :**

**निष्कर्ष :**

**मूल्यमापन :**

## प्रात्यक्षिक ६ : प्रेम संबंधावर लिहिणे

उदिष्टे:

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल .

- प्रेम संबंधावर लिखाण कसे करावे हे कळेल.
- प्रेम दृश्य लिहिताना घ्यावयाची काळजी आणि त्यातील प्रमुख घटक कोणते आहेत हे कळेल.

साहित्य: पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

विषय संकल्पना :

अनेक भाषातील जवळपास सर्वच चित्रपट प्रेम संबंधावर आधारित असतात. यात प्रामुख्याने चित्रपटातील मुख्य नायक आणि नायिका यांच्यातील प्रेमसंबंधावर अनेक सीन चित्रीत करण्यात आलेले असतात. नायक आणि नायिका यांच्यातील प्रेमसंबंध कधी कधी चित्रपटाचा मुख्य भाग असतो तर कधी कधी चित्रपट पुढे पुढे नेण्यास प्रेमसंबंधावर आधारित सीन सहायभूत ठरतात. प्रेम संबंधावर लिहिणाऱ्या लेखकाला नेहमी असे सीन आकर्षक आणि सुंदर व्हावेत असे वाटत असते पण त्याच बरोबर ते सत्याच्या जवळ जाणारेही असावेत याची खबरदारी लेखक घेत असतो. . प्रेमसंबंध हे कथेच्या मूळ आशयावर आधारित असल्याने केवळ एका धाटणीत प्रेम संबंध लेखकाने लिहिणे चुकीचे ठरते. कथेत तोच तोपणा असल्यास प्रेक्षकांना कथेत नाविन्यपूर्णता न सापडल्यास असे प्रेमसंबंध रटाळ व रुक्ष वाटायला लागतात. परिणामतः प्रेक्षकांना कथा व चित्रपट आवडत नाहीत. या प्रात्यक्षिकात आपण प्रेम संबंधावर लिहिताना कोणत्या बाबींचा

लेखकाने प्रामुख्याने विचार केला पाहिजे आणि प्रेमकथा उत्कंठावर्धक आणि आकर्षक कशी होईल हे लेखकाच्या अंगाने जाणून घेण्याचा प्रयत्न करणार आहोत.

### हळुवारपणे प्रेमसंबंध पुढे नेणे :

नायक व नायिका किवा कोणत्याही दोन पात्रांमधील प्रेम संबंध लेखकाने लिहित असताना त्यांनी दोघांमधील प्रेम संबंध प्रस्थापित होण्यासाठी सुरुवातीला काही काळ द्यावा. Love at First Sight दाखवून लगेच दोघांच्यामधील प्रेमाचे रुपांतर लग्नात झाल्याचे दाखवल्यास प्रेमकथा रोमहर्षक, उत्कंठावर्धक आणि साहसपूर्ण होणार नाही आणि अशा प्रेम कथेतून काय बोध घ्यावा याचा प्रेक्षकांना प्रश्न पडेल. त्यामुळे प्रेम संबंध हळुवार पणे पुढे नेण्यासाठी नायक आणि नायिका यांच्यातील संबंध प्रस्थापित होण्यासाठी लेखकाने सुरुवातील काही काळ देणे आवश्यक आहे. नायक आणि नायिका यांच्यातील प्रेम, त्यांची एकमेकाविषयीची ओढ, त्यांच्यातील भेटीगाठी यावर सुरुवातील काही सीन लिहिण्यात यावेत . त्यांच्यातील प्रेमसंबंध प्रेक्षकांना सुरुवातीच्या या सीनमधून जाणवली पाहिजेत अशा प्रकारचे लेखन लेखकाने करावे. नंतर प्रेमातून निर्माण झालेले आकर्षण आणि त्याचा शेवटचा प्रवास आणि शेवट अशा क्रमाने हळुवारपणे प्रेमसंबंध पुढे नेले पाहिजेत. प्रेम संबंधाचा शेवट सकारात्मक किवा नकारात्मक हे शेवटी कथानकाच्या आवश्यकतेनुसार, कथानकातून काय मेसेज समाजाला द्यायचा यावर अवलंबून असतो. सैराट चित्रपटातील शेवट ज्या पद्धतीने नकारात्मक पद्धतीने करण्यात आला त्यानुसार आपल्या पटकथेला नकारात्मक शेवट की सकारात्मक शेवट याचाही विचार लेखकाने प्रेमसंबंध लिहिताना केला पाहिजे.

## **पात्रांमधील सुसंवाद :**

नायक व नायिका यांच्यातील प्रेम संबंधासाठी त्यांच्यात वारंवार संवाद होणे आवश्यक आहे. तो संवाद कधी शाब्दिक असेल तर कधी कधी चेहऱ्याच्या हावभावानेही व्यक्त केला गेला पाहिजे. महत्वाचे म्हणजे नायक आणि नायिका यांच्यातील विचारधारा भिन्न असतील तर प्रेमसंबंध ताणल्या जातील अशी प्रेक्षकांची भावना असते. पण विचारधारा भिन्न असल्या तरी त्या विचारधारा त्यांच्या प्रेमात अडसर ठरू नयेत अशा पद्धतीने सीन लिहिले गेले पाहिजे. भिन्न विचारधाराचे लोक जेव्हा एकमेकांशी सुसंवाद साधतील तेव्हाच एकमेकाला समजावून घेण्याची संधी निर्माण होईल आणि त्यांना आपापल्या भावना व्यक्त करणे शक्य होईल. उदा. काही नायक नास्तिक असेल तर नायिका आस्तिक .अशा वेळी नायक आणि नायिका यांनी एकमेकांकडे व्यक्त होणे आणि आपापली भूमिका स्पष्ट करणे गरजेचे असते.यामुळे गैरसमज दूर होवून एकमेकाविषयी प्रेम आणि जिव्हाळा निर्माण झाला पाहिजे.

## **संघर्ष :**

पात्रांमधील सुसंवाद असला तरी तो संघर्षपूर्ण असणे आवश्यक आहे अन्यथा नायक आणि नायिका यांच्यातील प्रेमसंबंध आणि प्रेमभावना निरस व कंटाळवाणी होईल. संघर्षमय वातावरणात जुळलेल्या प्रेमाची नाती बघण्यास प्रेक्षकांना आवडत असते आणि त्यानुसार लेखकांनी पटकथेत प्रेमदृश्यात संघर्षमय पद्धतीने कथा पुढे नेण्यासाठी लिहिणे आवश्यक असते.कधी कधी असा संघर्ष निर्माण करण्यासाठी विचारधारे सोबतच नायक नायिका यांच्या घरातील विरोध किवा त्यांच्यातील गरिबी श्रीमंती किवा जात , धर्म , त्रिकोणी प्रेमसंबंध इत्यादीचाही वापर करण्यात येतो.संपूर्ण

कथेचा आशय लक्षात घेवून सुसंगत आणि कथेशी निगडीत विषयाद्वारे संघर्षमय प्रेमकथा फुलवली जाऊ शकते.

#### भावनिक प्रेम आणि शारीरिक प्रेम :

नायक आणि नायिका यांच्यातील प्रेम म्हणजे भावनिक आणि पवित्र अशा विचारमुल्यांवर आधारित असले पाहिजे त्यात कुठेही शारीरिक प्रेमाचा लवलेशही असता कामा नये अन्यथा नायकाचा खलनायक होण्यास वेळ लागणार नाही. याची दक्षता लेखकाने सतत घेतली पाहिजे आणि समाजात एक चांगला मेसेज या प्रेम संबंधातून पोहचला पाहिजे. गुन्हेगारी, हिसा किवा षड्यंत्र यांच्यामाईयमातून मिळणारे प्रेम हे चिरकाल टिकू शकत नाही आणि अशा पद्धतीने मिळवलेले प्रेम क्षणभंगुर असते हे लेखकाने नायक नायिका यांच्यावर प्रेम सीन लिहिताना लक्षात ठेवले पाहिजे.

#### कृती:

९. “प्रेम कथा ” या विषयावर आधारित आपण एक पटकथा संहितेचा अळ्यास करा किवा प्रेम कथेवर आधारित चित्रपट बघा आणि त्या चित्रपटाचा शेवट नकारात्मक किवा सकरात्मक दाखविण्यात आला आहे ते लिहा आणि त्यावर आपल्या भाषेत स्पष्ट अभिप्राय लिहा.

आपण बघितलेल्या चित्रपटाचे/संहितेचे नाव : \_\_\_\_\_

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

२. प्रेम संबंधावर आधारित चित्रपट पण त्यांचा शेवट लेखन करण्यासाठी प्रामुख्याने कोणत्या बाबी विचारात घेतल्या गेल्या पाहिजेत याविषयी तुमच्या भाषेत प्रत्येक बाबीवर थोडक्यात माहिती लिहा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

अवलोकन :

निष्कर्ष :

मूल्यमापन :

## प्रात्यक्षिक ७: संवादलेखन

उदिष्टे:

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल

- संवाद लेखन म्हणजे काय याची माहिती कळेल .
- संवाद लेखन कसे करावे हे कळेल

साहित्य: पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

विषय संकल्पना:

संवाद म्हणजे दोन किंवा अधिक व्यक्तीच्या विचारांचे आदानप्रदान शब्दांच्या माध्यमातून करणे होय. संवाद लेखनासाठी चित्रपटाचा योग्य फॉर्म काय आहे हे समजावून घेणे आवश्यक असते. त्याच बरोबर चित्रपट कथा पडद्यावर कशी दिसेल याची स्पष्टता लेखकाला असणे आवश्यक आहे किंवा त्याला कथा व्हीज्वलाइज करता आली पाहिजे. साहजिकच आपल्याला याची कल्पना आहे की, चित्रपटातील प्रतिमा पुढे पुढे जात असतात तेव्हा प्रतिमांना योग्य आवाज आणि संवादाची जोड देण्यात आलेली असते. तेव्हा आपला काल्पनिक कॅमेरा कुठे लावायचा आणि कोणता सीन कोणत्या कारणासाठी आणि कसा चित्रित करायचा आणि पात्रांनी काय बोलले पाहिजे याची माहिती असणे आवश्यक आहे. जेव्हा तुम्ही दोन पात्रांमधील संवादाचा सीन लिहिता आणि तो सीन/संवाद चित्रपटाचे कथानक पुढे नेण्यास असमर्थ ठरत असतील तर साहजिकच प्रेक्षकांचा उत्साह कमी होतो आणि त्यांना कथानक रुक्ष वाटायला लागते. त्यामुळे महत्वाची बाब म्हणजे प्रत्येक सीनवर व्यवस्थित वर्कआउट होणे आवश्यक असून कोणत्या पात्रासाठी सीनमध्ये संवाद लिहिणे गरजेचे आहे हे कळले पाहिजे आणि संवादातून पात्रांना नेमकं काय साध्य करायचं आहे

हे स्पष्ट झालं पाहिजे. संवाद प्रभावी व्हावेत यासाठी आपल्याला सीनमध्ये दिसणाऱ्या वस्तूंवर लक्ष केंद्रित करावे लागेल आणि पात्रांच्या शारीरिक हालचालींचा अभ्यास करावा लागेल. हे केल्यानंतरच संवाद लेखन केले पाहिजे ज्यामुळे आपला सीन लिहिण्याचा उद्देश सफल होईल . सामन्यात: असा नियम आहे की, संवाद कमी असायला हवीत आणि पात्रांच्या देहबोली जास्त बोलक्या असयला हव्यात. जेव्हा आपणास सीनची पूर्ण स्पष्टता असेल आणि सीनचा एकूणच अभ्यास झालेला असेल तेव्हा आपण संवाद लेखनास सुरुवात केली पाहिजे.

### उत्कृष्ट संवाद लेखन कसे करावे ?

संवादाचे अनेक घटक असतात ज्यामुळे चित्रपट कथानक पुढे जाण्यास सहाय्य होते. संवाद लिहिताना खालील गोष्टींची काळजी घेणे आवश्यक असते.

- i. शब्द कमी वापरावीत
- ii. संवादात साधेपणा असावा
- iii. संवादात शब्दांची संवादफेक असावी नुसतेच स्वसंभाषण नसावे .
- iv. अदृश्य प्रसंग/घटना इत्यादीच्या प्रतिमा संवादातून प्रेक्षकांना निर्माण करता आल्या पाहिजेत.
- v. संवादातून कथानक पुढे पुढे सरकले पाहिजे.

संवादातून काही गोष्टी अभिप्रेत असतात जसे त्यांच्या प्रेरणा काय आहेत? त्यांनी संवादाला अनुसरून अभिनय केला पाहिजे आणि कथानकातून त्यांनी काय धडा घेतला किवा त्यांचा संघर्ष कशासाठी आहे हे दिसले पाहिजे.

संवादातून प्रेक्षकांना कथानकाचा मुख्य गाभा काय आहे याची माहिती मिळाली पाहिजे आणि महत्वाची बाब म्हणजे संवादातून त्यांचे मनोरंजन झाले पाहिजे.

उत्कृष्ट संवाद लेखनासाठी तुम्हाला तुमच्या पात्रांचा चांगला अभ्यास असला पाहिजे . तुम्ही त्याच्या भूमिकेत शिरून त्यांच्या सारखा विचार केला पाहिजे आणि त्यांच्या विशिष्ट गरजा, इच्छा , आवड व नावड लक्षात घेता ते काय बोलतील याची माहिती असणे आवश्यक आहे. त्यामुळे लेखक म्हणून आपल्याला आपल्या कथेतील पात्रांच्या प्रेरणा समजावून घेता आल्या पाहिजेत आणि त्यानुसार कार्यरत पात्रांचे वर्णन करता आले पाहिजे. संवाद लेखक या नात्याने आपण सीनमधील प्रत्येक पात्र आणि कथानकाला न्याय देण्यासाठी उत्कृष्ट संवाद लेखन केले पाहिजे.

संवाद लेखन प्रभावी व्हावे आणि त्यात नैपुण्य मिळवण्यासाठी खालील काही बाबीचा विचार करण्यात यावा.

- i. पात्रांच्या भूमिकेतून विचार करणे, त्यांची सीननिहाय उद्देश आणि पाश्वर्भूमीचा अभ्यास आणि प्रत्येक पात्राला काय हवं याचा विचार करणे.
- ii. प्रत्येक सीननिहाय पात्र कोणते ते अधोरेखित करा आणि त्यांना काय हव असत आणि त्यांना ते मिळत का ?

- iii. संवादाचा योग्य क्रम ठरवा आणि त्यात जिवंतपणा आणण्याचा प्रयत्न करा.
- iv. पात्रानिहाय संवाद लिहा.
- v. संवाद कथानकाला पुढे नेण्यास सहायभूत असावेत.
- vi. संवादाद्वारे सत्यात आणि माहिती प्रेक्षकांना देता आली पाहिजे.
- vii. पात्रांचा सखोल अभ्यास आणि अंतर्गतगुणांची माहिती असायला हवी.
- viii. पात्रांमध्ये सुसंवाद असायला हवा.
- ix. पात्राचा अभिनय संवादाला अनुसरून असायला हवा.
- x. प्रत्येक सीन एकमेकांशी जोडल्या गेलेले हवेत.
- xi. आपण लिहिलेले संवाद जाणकार व्यक्ती किवा मित्राला वाचण्यासाठी द्या आणि त्यांनी सुचविलेले बदल आवश्यक वाटत असतील तर करा.

### कृती:

- १ संवाद म्हणजे काय? संवाद लिहिताना कोणत्या गोष्टींची काळजी घेणे आवश्यक असते याविषयी माहिती लिहा
- 
- 
- 
-

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

२. संवाद लेखन प्रभावी होण्यासाठी कोणत्या मुख्य बाबीचा विचार करण्यात येतो? त्याविषयी थोडक्यात माहिती लिहा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

२. आपल्याला आवडलेले कोणतेही पाच संवाद चित्रपट नावासह लिहा आणि ते का  
आवडले यावर भाष्य करा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

अवलोकन :

निष्कर्ष :

मूल्यमापन :

## **प्रात्यक्षिक ८ : चित्रपट किंवा टीव्हीसाठी लेखनातील फरक आणि लघुफिल्मसाठी लेखन**

### **उदिष्टे:**

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल .

- चित्रपट आणि टीव्हीसाठी लेखनातील फरक कळेल .
- लघुफिल्मचे प्रकार कळतील .
- लघुफिल्मसाठी लेखन कसे करावे हे कळेल .

**साहित्य:** पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

### **विषय संकल्पना:**

चित्रपट आणि टीव्ही उत्पादन मूल्यांमध्ये असंख्य फरक आहेत जे प्रेक्षकांना त्यांच्या वेगवेगळ्या चित्रपट आणि टीव्ही पाहण्याच्या अनुभवांतून जाणवत असते. सिनेमामध्ये चित्रपट पहाताना, संपूर्ण स्क्रीनवर लक्ष केंद्रित केले जाते, तर जेव्हा आपण घरी आपल्या लिंगिंग रूममध्ये टीव्ही पाहतो तेव्हा स्क्रीन लहान असते आणि आपल्याला विचलित करण्यासाठी असंख्य गोष्टी असतात. परिणामी टीव्हीला प्रेक्षकांच्या लक्षी कमी मागणी असल्याचे दिसून येते. चित्रपटाच्या तुलनेत टीव्हीचा वेग बज्याचदा मंद असतो , सिनेमॅटोग्राफिक शैली कमी चमकदार असते आणि ध्वनी कमी असतो.

चित्रपट निर्मितीत टीव्हीच्या तुलनेने कमी तंत्रज्ञाची आवश्यकता असते. टीव्ही उद्योग भारतासह जगभरातील एक मोठा उद्योग असून टीव्हीची मोठ्याप्रमाणात गरज निर्माण झाली असून मागणीतही मोठ्याप्रमाणात वाढ झाली आहे. टीव्ही उद्योग हा राक्षसासारखा आहे असे म्हंटले तर वावगे ठरू नये. सतत चोवीस तास टीव्ही मालिका चालू ठेवणे आर्थिकवृष्ट्या खर्चिक असून नवनवीन कथा, मालिका, न्यूज , वेगवेगळे शोज च्या माध्यमातून दर्शकांना सतत नाविन्यपूर्ण देत रहावे लागते. अनेक वेळा टीव्ही प्रसारण करणारे मोठमोठे उद्योग समूह एका चानेलसाठी कॉनटेंटची निर्मिती करून ते त्याचे प्रसारण इतर चानेलसाठीही करीत असतात आणि ते नंतर जगभरातील इतर प्रसारकांना देखील विकली जातात.

जेव्हा आपण टीव्हीसाठी लिहाल तेव्हा आपण प्रोग्रॅम स्वरूपाचा निर्माता असण्याची शक्यता नाही परंतु त्याएवजी आपणाकडे पेड रायटर म्हणून काम दिले जाईल आणि मालिकेसाठी काहीतरी लिहून घेतले जाईल जसे गीत, संवाद, कथा, पटकथा इत्यादी. आपण जे लिहून देणार आहात त्याच्या संपादनाची जबाबादारी मालिका संपादकाकडे असेल आणि तो आपल्याला हवे त्यानुसार आपण दिलेल्या मसुद्यात बदल सुचवेल किवा करेल. आपणाकडे जेव्हा मालीकासंबंधी लिखाण करण्यासाठी येते तेव्हा निर्माता/दिग्दर्शकाची आपणाकडून मालिकेतील पात्रे जाणून घेण्याची आणि त्यात बदल न करण्याची आशा असते .आपण जर पात्रात अनावश्यक बदल केले तर मालिकेची दीर्घायुषीता धोक्यात येईल. जेव्हा आपण टीव्ही आणि चित्रपटाचे विश्लेषण करता तेव्हा आपल्या लक्षात येईल कि चित्रपटातील पात्रांमध्ये टीव्ही मालिकेतील पात्रांपेक्षा कमी कालावधीत मोठ्याप्रमाणात बदल घडवून येतात. कारण ती चित्रपट कथेचीही गरज असते. तीन तासांच्या चित्रपटात आपल्याला पात्रांचा जीवनप्रवास आणि त्याला साध्य करायचे द्येय यासठी

कथानक योग्य पद्धतीने गुंफायचे असते. यावर अधिक भाष्य करताना आपल्याला खालील बाबींचा विचार करावा लागेल.

1. आपण एखाद्या चित्रपटासाठी लिहित असाल तर आपल्याला आपली कथा अशा प्रकारे तयार करण्याची आवश्यकता आहे की त्यातील मुख्य पात्रासमोर मोठ्या आव्हाने उभी करावी लागतील आणि त्याला कसे तोंड द्यावे लागेल याविषयी कृतीतून सिद्ध होणाऱ्या प्रसंग किवा घटनांचे चित्रण करावे लागेल. हे पात्रात होणारे बदल टीव्ही/ नाटका होणाऱ्या पात्रापेक्षा जास्त प्रमाणत असतील. या बदलला काही अपवाददेखील आहेत. जेम्स बॉडसारख्या ॲक्शन चित्रपटात पात्रात अपेक्षापेक्षा खूप कमी अगदी नगण्य बदल होतात कारण ॲक्शन चित्रपटांमध्ये सर्वसाधारणपणे भव्य देखावा आवश्यक असल्याचे आणि त्यास पात्रापेक्षा जास्त महत्व असल्याचे दिसते आणि चित्रपटाचा फॉर्मदेखील एक सारखाच असल्याने पात्रांमध्ये तुलनेने बदल कमी असतात.

2. आपण जर एखाद्या टीव्हीसाठी लिहित असाल तर आपल्याला आपली कथा एका विशिष्ट फॉर्मेटमध्ये लिहिण्याची आणि आपल्याला एका फॉर्म्युलासह लिहिण्याची आवश्यकता आहे कारण आपल्याला प्रत्येक आठवड्याला पात्रामध्ये मोठे बदल न करता कथानाक पुढे न्यायचे असते. पात्रामध्ये बदल करणे अपेक्षित असल्यास चित्रपटाच्या तुलनेत टीव्ही मालिकातील पात्रातील बदलाची गती कमी असावी आणि शक्यतो नायकापेक्षा खलनायकाच्या पात्रात बदल घडण्याची प्रक्रिया करावी. खलनायक/खलनायिका यांच्यातील नैतिक/सामाजिक मूल्यात होणारे बदल दाखवून आपण पात्रातील बदलासह टीव्ही मालिकेचे कथानक पुढे नेवू शकतात.

लक्षात ठेवण्याची आणखी एक गोष्ट अशी आहे की चित्रपटांमध्ये टीव्ही मालिकेपेक्षा कमी पात्र असतात. याचा अर्थ असा होत नाही की कमी पात्र असणारी चित्रपटच 'अस्सल' चित्रपट आहेत, परंतु दोन-तासांच्या मूळीमध्ये आपल्याकडे अनेक पात्र निर्माण करून त्यांना योग्य न्याय

देण्यासाठी अपुरा वेळ असतो म्हणून पात्राची संख्या कमी असणे अधिक उचित असते. चित्रपटात पात्र कमी असली तरी त्यांच्यामध्ये कमी वेळात अर्थपूर्ण संघर्ष तयार करा आणि सर्वांना आव्हानांना सामोरे जात समाधानपूर्वक चित्रपटाचा शेवट करा. चित्रपटात नेमकी किती पात्र असा प्रश्न आपल्याला आता पडला असेल. अंगठ्याचा नियम म्हणून, चित्रपटांमध्ये पाच आणि सात प्रमुख पात्र (लीड कॅरेक्टर, मुख्य विरोधी पात्र, मित्र इत्यादी) असावेत, तर एका टीव्ही मालिकात जसे डेली सोप इत्यादीत 10-20 पात्र असावीत. आपण टीव्ही साठी कथानक लिहिताना हेही लक्षात घ्या, की आपण पूर्ण केलेल्या कथानकात अजून एखाद्या सीनचा समावेश करणे शक्य होईल. बन्याच वेळा प्रेक्षक मालिका बघताना स्वतःची मतप्रदर्शन करून अशा सीनच्या निर्मितीसाठी उत्सुक असतात. त्यांची आणि कथानकाची गरज लक्षात घेता एक दोन सीनचा नंतरहून समावेशासाठी स्पेस असला पाहिजे.

### लघु चित्रपट :

फिल्म आणि टीव्ही उद्योगांमध्ये स्वतः चे लक्ष वेधण्याचा एक उत्कृष्ट मार्ग म्हणजे एक लघु फिल्म लिहिणे, दिग्दर्शित करणे किंवा निर्माण करणे. लघु चित्रपट आपल्या प्रतिभेसाठी एक उत्तम सिद्धान्त आहे आणि लहान फिल्म लिहिण्याची क्षमता आपल्यात निर्माण झाल्यास आपल्याला एकप्रकारचे समाधान मिळेल. पटकथा लेखकांच्या करिअरमध्ये लघु कथा लिहिणे आणि त्याची निर्मिती करणे एक महत्वाच पाऊल आहे. लेखकाने लघु कथा यशस्वीपणे लिहिली म्हणजे त्याला रूपेरी पडद्यासाठी मोठी चित्रपट पटकथा लिहिता येईलच असे होत नाही. लेखकाला मोठ्या चित्रपटाच्या पटकथा संहितेचा अभ्यास करून सतत लिहित राहणे आणि

सरावाने स्वतः मध्ये लिखाणाची शैली निर्माण करून मोठ्या पडद्यासाठी पटकथा लिहिण्याची तयारी करावी लागते आणि तसा जाणीवपूर्वक प्रयत्न करावा लागतो .

बन्याचदा लघुफिल्म लिहिताना लेखक त्याकडे फिचर फिल्मसारखे लक्ष देत नाहीत पण लहान चित्रपटांविषयी आपल्या लक्षात ठेवणे सर्वात महत्वाचे गोष्ट आहे की वैशिष्ट्यांच्या रूपात देखील लघुफिल्मचा दर्जाही उत्तम असला पाहिजे. आपण एक लघु फिल्म लिहित असल्यामुळे याचा अर्थ असा नाही की आपण थोडे इव्हेंट्स, कमी मनोरंजक गोष्टी लिहिल्या पाहिजेत.

आपण लघुफिल्म लिहिताना पात्र, मुख्य पात्रांच्या जीवनातील काही अत्यंत महत्त्वपूर्ण नाट्यमय घटनांविषयी आपल्या सिनेमातील कल्पनांवर लक्ष केंद्रित केले पाहिजे ज्यामुळे कथेत अर्थपूर्ण बदल होऊ शकतो .पात्रांच्या आंतरिक स्वरूपाबद्दल, भावनिकवृष्ट्या गहन बाबींवर लक्ष केंद्रित केले पाहिजे.

लघुपट देखील फीचर फिल्मांसारख्या वैशिष्ट्यीपूर्ण आणि संघर्षात्मक पद्धतीने फीचर फिल्मच्या संरचनेस अनुसरण लिहिले पाहिजे. लघुचित्रपटासाठी लिखाण करतानाही फीचर फिल्मसाठी जसा सर्वांगी विचार करावा लागतो तसाच विचार येथेही केला गेला पाहिजे. लघु चित्रपटासाठी पटकथा लिहिताना आपण खालील मुद्यांचा विचार केल्यास निश्चितपणे आपल्याला आपली लघुपटकथा आकर्षक आणि अर्थपूर्ण बनविणे सहज शक्य होईल.

1. आपले मुख्य पात्र आणि सेटिंगचा विचार करा
2. मुख्य पात्राचा उद्देश काय आहे?
3. त्याला / तिला काय हवे आहे ते मिळविण्यासाठी तो कसा प्रयत्न करतो?

4. धक्के - कारण त्याला / तिला खरोखर काय हवे आहे याची जाणीव नसते आणि त्याला / तिला काय हवे आहे ते मिळविण्यासाठी सामान्यतः चुकीच्या मार्गावर जावे लागेल. असे मार्ग न आवडणारे विरोधक मुख्य पात्राच्या विरोधात संघर्ष निर्माण करतील आणि त्याचा मुकाबला तो / ती कशा प्रकारे करेल .यात नायक आणि खलनायक यांच्यात अनेक धोके आणि धक्के निर्माण होतील. यात प्रत्येकजण यशस्वी होण्यासाठी संघर्ष करेल.
5. संघर्ष - मुख्य पात्र पराभवाच्या छायेत आहे अशी परिस्थिती निर्माण झाल्यास संघर्ष आणि युद्ध आणखी कडवा होत जाईल आणि मुख्य पात्र पराभूत कसे होईल यासाठी विरोधाकाकडून चोहोबाजूने प्रयत्न होणे
6. अंतिम लढा - मुख्य पात्र त्याच्या / तिच्या द्येय साध्य करण्याच्या अंतिम प्रयत्नात स्वतःच्या सर्व शक्तीनिशी लढणे.
7. समाप्ती - मुख्य पात्राला सुरुवातीला हव्या वाटणाऱ्या गोष्टी ह्या केवळ सत्याचा एक भाग होता , जीवनात त्यापेक्षा अनेक गोष्टी आहेत त्या अधिक महत्वाच्या आहेत. मुख्य पात्राच्या दृष्टीकोनात शेवटी होणारा बदल लेखकाने टिपणेही आवश्यक असते.
- आपणास प्रश पडला असेल की वरील सर्व बाबींचा एखाद्या लहानशा/ लघुपट चित्रपटात कसा अंतर्भाव करता येईल? अर्थात याचे उत्तर सोपे आहे, आपण यासाठी कृती (Action ) कमी करा, अनेक थीमना प्रतिबंधित करा आणि सर्वात महत्वाचे म्हणजे आपल्या लघुपटातील पात्रांची संख्या अगदी मर्यादित ठेवा. एका लघुपटा मध्ये कवचितच दोनपेक्षा जास्त विकसित पात्र असतात: मुख्य पात्र आणि मुख्य विरोधी पात्र.

लघुफिल्म विषयी आपल्या अधिक माहिती व्हावी म्हणून आपण खालील तीन मुख्य प्रकारचे लघुपट आहेत त्यांचा अभ्यास करावा. या प्रत्येकामध्ये भिन्न वैशिष्ट्ये आहेत त्यांच्याकडे लक्ष द्यावे आणि प्रत्येकासाठी लघुलेखन करावे.

अ . शॉर्ट शॉर्ट्स (2-5 मिनिटे) - कधीकधी शॉटगन शॉर्ट्स म्हटले जाते. यात सामान्यतः स्पेन्स पेक्षा रहस्यमय आणि नाट्यमय तणाव निर्माण करण्यासाठी एका युक्तीचा वापर केला जातो.

- i. यात मुख्य पात्र निर्माण करण्यात आलेले असते आणि हे पात्र स्वतः मूलभूतपणे बदलण्याएवजी सुडाच्या भावनेतून जास्त कार्य करीत असल्याचे दाखविण्यात येते.
- ii. शॉर्ट शॉर्ट्स बहुतेकदा औपचारिक पद्धतीने सांगण्यात येतात आणि यात आवश्यकता नसतानाही विनोदीपद्धतीने आवाजाचा वापर करण्यात आलेला असतो.
- iii. सर्व लहान शॉर्ट्स एखाद्या विनोदासारखे किंवा टीव्ही जाहिरातीसारखे बनवले जातात ज्यामध्ये शेवटापर्यंत रहस्यमयता बाळगण्यात येते.
- iv. लहान शॉर्टचा दुसरा सर्वात लोकप्रिय फॉर्म म्हणजे गोलाकार शॉर्ट असतो, जिथे एखादे पात्र द्येय गाठण्यासाठी त्याच त्याच विनोदी क्रिया करीत असते. उदा. एक मुलगा भयभीत कुऱ्याकडून एक बॉल पुनर्प्राप्त करण्याचा वारंवार प्रयत्न करतो.
- v. शॉर्ट शॉर्ट्सच्या तिसऱ्या सर्वात लोकप्रिय स्वरूपामध्ये चित्रपटाची एक वैचारिक रचना असते ज्यामध्ये एका परिचित जगाशी ओळख दर्शविण्यात होते. जसे एखाद्या व्यक्तीला अपंगत्वामुळे डोळे गमवावे लागतात आणि परत त्याला डोळे प्राप्त झाल्यावर परिचित जगाशी त्याची पुन्हा ओळख होते.

vi. शॉर्ट शॉर्ट्स बनविण्यासाठी खर्च कमी असतो. त्यामुळे तो बनविण्यासाठी नवलेखक व दिग्दर्शक सुरुवातीच्या काळात जास्त आकर्षित होतात.

ब. मिड-रेंज शॉर्ट्स (8-12 मिनिटे) - या लघुफिल्म फंड कॅटेगिरित अधिक लोकप्रिय आहेत.

i. मिड-रेंज शॉर्ट्समध्ये मुख्य पात्र आणि मुख्य विरोधीपात्रासह सामान्यतः अन्य दोन किंवा तीन पात्र असतात. जसे मुख्य पात्राची आई किंवा पत्नी इत्यदी.

ii . यातील कथा सहसा दोन मध्यवर्ती पात्रांमधील वादविवादाच्या विशिष्ट क्षणावर लक्ष केंद्रित करतात.

iii . यात नैतिक मूल्यापेक्षा शास्त्रीय महत्वाकांक्षावर जास्त भर देण्यात आलेला असतो.

iv . शॉर्ट शॉर्ट्सपेक्षा मिड-रेंज शॉर्ट्समध्ये बन्याच वेळा परिभाषित शैलीची महत्वाकांक्षा असते, कारण त्यांच्याकडे प्रेक्षकांच्या तुलनेत खेळण्यासाठी अधिक वेळ असतो आणि मुख्य पात्रांबद्दल सहानुभूती, दया आणि भय उत्पन्न होते.

v. मध्यम-श्रेणी शॉर्ट्स बन्याचदा कथा कथन स्वरूपाचे असतात.

vi यात मध्य भागासाठी अत्यल्प वेळ समर्पित केलेला असतो. सुरुवाती आणि शेवटी यासाठी अधिक वेळ समर्पित केलेला असतो.

क . लॉग शॉर्ट्स (12-25 मिनिटे) - कधीकधी यास अकादमी शॉर्ट्स असेही संबोधतात आणि मोठ्या महत्वाकांक्षी आणि अधिक जटिल थीमसाठी लॉग शॉर्ट्सची निवड करतात.

i. यात सुरुवात, मध्य आणि शेवट विकसित केलेली असतात.

- ii. यात चार पात्र असू शकतात पण दोन मुख्य पात्र विकसित करण्यात भर देण्यात आलेला असतो.
- iii. जास्त वेळ असल्याने अधिक महत्त्वपूर्ण पात्रांचा विकास आणि वास्तविक बदल करण्याचा प्रयत्न करण्यात येतो.
- iv. यात लेखक अर्थपूर्ण जीवन बदलणारे ड्रामा तयार करण्यासाठी पात्रांचे वर्णन अधिक स्पष्टपणे दर्शवू शकतात आणि नाट्यमय साधनांच्या संपूर्ण श्रेणी (नाट्यमय तणाव, रहस्य, शैली विनोद - परंतु विशेषतः रहस्यमय) सादर करतात.
- v. यात लेखक कमी संकल्पनात्मक असतात आणि अधिक पारंपारिक कथा स्वरूपचा अवलंब करतात . उदा. सुरवातीपासून शेवटपर्यंत एक रेखीय टाइमलाइन यावर कार्य करीत असतात.
- vi हे शॉर्ट्सना इतर शॉर्ट्सपेक्षा जास्त उत्पादन मूल्य असतात कारण ते लेखक-निर्देशक-निर्मात्यांनी बनविलेले असतात.आणि यामुळे त्यांचा फिचर फिल्म निर्मितीकडे प्रवास अधिक सुकर होण्याची चिन्ह असतात.

**सारांश :** आपल्या डोक्यात कल्पना एका सेकंदात येईल,पण त्यावर एक लघु फिल्म विकसित करण्यास एक वर्ष लागू शकते. आपण कोणत्याही एका कल्पनेवर विश्वास ठेवण्यापूर्वी, अनेक भिन्न लघुपट कल्पनांचा विचार करा.त्यातील चार किंवा पाच कल्पनावर कार्य करा. या अभ्यासात पुढील बाबी ओळखण्यासाठी प्रयत्न करा) किती महत्त्वपूर्ण पात्र आहेत, ब) संघर्ष कुळून येतो, c) कोणत्या घटना दर्शविल्या पाहिजेत, ड) आपण कोणत्या भिन्न फॉर्ममध्ये कथा सांगू शकता , इ) कथा शैली, एफ) एक मूलभूत आधार जे दर्शवते की मुख्य पात्र कोण आहे

आणि त्याला काय पाहिजे आहे? , ते मिळविण्यासाठी त्यांना काय करावे लागेल आणि ते त्यांना कसे मिळेल आणि मुख्य पात्रात काही बदल घडेल का ?

वरील प्रश्नांचा विचार करा आणि त्यापूर्वी दिलेल्या माहिती विश्लेषणाच्या आधारे लघुकथा लिखाणाचा प्रयत्न करा.

कृती:

१. चित्रपट लेखन आणि टीव्हीसाठीचे लेखन यातील मुख्य फरकाची माहिती लिहा .

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

२. लघुफिल्मचे प्रकार कोणते ? प्रत्येकामधील भिन्न वैशिष्ट्यांची माहिती लिहा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**अवलोकन :**

**निष्कर्ष :**

**मूल्यमापन :**

## प्रात्यक्षिक ९: संहिता संपादन प्रक्रिया/प्रश्नावली

उदिष्टे:

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आणास खालील माहितीचे आकलन होईल .

- संहिता संपादन याची माहिती कळेल
- संहिता संपादन करताना विचारात घ्यावयाच्या महत्वाच्या बाबींची माहिती कळेल

**साहित्य:** पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

**विषय संकल्पना:**

संहिता संपादन प्रक्रिया चित्रपट सक्षम होण्याच्या दृष्टीने अत्यंत महत्वाची प्रक्रिया आहे. लेखकाने संहिता संपादन करताना संहितेच्या विविध बाजूंचा अभ्यास करून मूळ कथेचा आशय पटकथेच्या माध्यमातून व्यवस्थित मांडण्यात आलाय की नाही याची खात्री करण्याचे हे एक साधन असून काटेकोरपणे यातील संकल्पने पासून तर शेवटापर्यंतच्या प्रत्येक बाबीवर विचार केला पाहिजे आणि मूळ कथेपासून पटकथा फारकत घेत असेल तर त्या दृष्टीने आवश्यक ते बदल संहितेत घडवून आण्याच्या दृष्टीने पटकथाकाराला सूचना दिल्या पाहिजेत . या संपादन प्रक्रियेत संपादनाची भूमिका पार पाडणाऱ्या व्यक्तीला पटकथेशी निगडीत खालील बाबीवर सखोल अभ्यास करून संपादनाची महत्वपूर्ण जबाबदारी निभवावी लागते. संपादन करीत असताना संपादकाला स्वतःला काही प्रश्न विचारावे लागतात आणि पटकथेत त्याची उत्तरे शोधावी लागतात.

### १. संकल्पना (PREMISE)

कथेची संकल्पना स्पष्ट आणि सक्षम आहे का

## २. पात्र (CHARACTER)

कथा कोणाची आहे ? कथेचं मूळ काय आहे ?

कथेतील पात्रांबाबत आपण जागृत आहेत का ? आणि त्यांचा कथेतील भूमिकेबाबत नेमक काय घडतं? पात्र महत्वपूर्ण आणि आकर्षक आहेत का ? त्यांच्या निर्मितीमागचा उद्देश स्पष्ट आहे का ? मुख्य पात्राचा चित्रपट प्रवासादरम्यान होणारा बदल कसा आहे ?

त्यांच्या कथेतील भूमिकेविषयी आणि ही भूमिका कोण कलाकार निभवणार याची पूर्ण माहिती .

## ३. कथा (STORY)

कथा काय आहे ?

एक किमान दोन तासांचा मोठा चित्रपट निर्मित होईल अशा प्रकारच कथानक आहे का | Is कथेत नायक आणि खलनायक यांच्यातील संघर्ष ताकदीचा आहे का?

कथेत पुरेशा प्रमाणात आश्चर्य कारक घटना, ट्युस्ट आहेत का ?

बदल किवा संघर्ष काय आहे ?

## ४. रचना /फॉर्म (STRUCTURE)

चित्रपट कथा कोठून सुरु होते ? कथा सुरु करण्यासाठी खूप कालावधी घेण्यात आला कि खूप विलंबाने कथा सुरु होतेय ?

प्लॉट मुद्दे परिणामकारक आहेत का ?

दृश्यांचा क्रम योग्यरीतीने मांडण्यात आला आहे का ?

दृश्य कथा पुढे नेण्यास सक्षम आहेत का ?

एखादे दृश्य आवश्यकतेपेक्षा खूप लांब झाले नाही ना ?

सगळी दृश्य रुक्ष झाली नाहीत ना ?

सुरुवातीला निर्माण केलेली दृश्य/पात्र मध्यान्तरा नंतर महत्वपूर्ण भूमिका निभावत आहेत ना?

#### ५. संवाद ( DIALOG )

पटकथेत आवश्यकतेपेक्षा खूप जास्त संवादाची भरणा केली आहे का आणि त्या संवादफेकी साठी

पात्रांच्या कृती त्याप्रमाणात आहेत का ?

केवळ संवादातून कथा पुढे जाते कि पात्रांच्या अभिनयातूनही ?

पात्रांच्या भूमिकेनुसार योग्य संवाद लिहिण्यात आलेत का ?

नेहमीच्या पठडीतील तेच ते संवाद तर नाहीत ना ?

संवाद कथेला अनुसरून आहेत का ?

कथेचा फॉर्म योग्य आहे का

#### ६. संकल्पना (THEME)

कथा नेमकी कशाबाबत आहे ?

कथा प्रेक्षकापर्यंत नेण्याचे योग्य प्रयोजन पटकथेत आहे का ?

## **संहिता संपादन : दृश्यनिहाय पृथकरण**

पटकथाकाराने संहितेचे दृश्यनिहाय पृथकरण करायला हवे .यासठी त्याने खालील स्वरूपाच्या प्रश्नावलीद्वारे प्रत्येक दृश्याचे पृथकरण करायला हवे. असे केल्यास पटकथेतील उणीवा दुरुस्त करण्याची संधी पटकथाकाराला मिळेल आणि त्यामुळे पटकथा सक्षम होईल.

1. सीनचा (दृश्याचा) वातावरण (मूळ) काय आहे? तो कशातून व्यक्त होतो.  
दृश्यातील सेटीगची असा मूळ निर्माण करण्यातील भूमिका काय आहे ? प्रेम, राग, रोमान्स इत्यादी निर्माण करण्यासाठी सेटींगचा योग्य वापर आणि निर्मिती झाली पाहिजे.
2. प्रत्येक सीनमध्ये काय आहे ? ते स्पष्ट मांडण्यात आलंय का? यासाठी पाश्वकथेची आवश्यकता होती/आहे का ?
3. सीनमधील उपवाक्य आहेत का ? त्यात संवाद, कृती आणि मूळ विषयी उल्लेख आहे का ? पात्र एकमेकांना नेमकं काय बोलत आहेत ? संवादातून भावना आणि पुढील प्रवासाबाबत स्पष्टता येते का ?
- 4 . कथेच्या सध्य सीनमध्ये पात्र मागील सीनवर आधारित कोणत्या कृती करतात ?
- 5 . पात्रांचाच्या सहजीवानाबाबूल घोषवारा देण्यात यावा.
- 6 . सीन कोणाचे आहे? काही पात्रामध्ये बदल होतो का ? सीनमध्ये कशाचा विचार करण्यात आलाय -कृती आणि घटना सुसंगत, विश्वसनीय, आणि सत्यतेच्या जवळपास जातील अशारितीने मांडण्यात आल्यात का ?
7. प्रत्येक पात्रांना काय हवंय -ते त्यांना सहजासहजी का साध्य करता येत नाही , त्यांच्या

मार्गात काय अडचणी आहेत ? सीनमध्ये कोणत्याप्रकारचा संघर्ष आहे?

8. सीन मध्ये कथेतील कोणता मुद्दा निर्माण झाला? त्यावर कोणती कृती करण्यात आली ?
9. सिनचा रेड डॉट काय आहे / म्हणजे सीन खन्या अर्थाने कथेतील मुद्याना न्याय देईल .
10. कथेत ट्युस्ट आहत का? उर्जा आणि अवहनात्मकता टिकविण्यासाठी कथेत ट्युस्टची आवश्यकता असते.
11. हा सीन काढून टाकण्याची आवश्यकता आहे का?

कृती:

४. पटकथा संहिता संपादनाची आवश्यकता अधोरेखित करा .

उत्तर :

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

प्रश्न २ : संहिता संपादन प्रक्रियेत विचारात घेतल्या जाणाऱ्या विविध घटकांची माहिती लिहा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

अवलोकनः

निष्कर्षः

मूल्यमापनः

## **प्रात्यक्षिक १० : पुनर्लेखन**

**उदिष्टे:**

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल

- पुनर्लेखन प्रक्रिया समजावून घेता येईल
- संवाद आणि कथा पुनर्लेखन कसे विकसित करावे हे समजेल
- पुनर्लेखनाच्या घटकाची माहिती मिळेल
- पुन्हा लिहिण्याची गरज का आहे हे समजेल.

**पुनर्लेखन:**

पुनर्लेखन ही प्रक्रिया पटकथा संहितेत सुधारणा घडविण्यासाठी आवश्यक असते. चित्रपट दिग्दर्शक, निर्माता, कलाकार किंवा गुंतवणूकदार यांच्या मागणी किंवा शिफारशीनुसार लेखकाला संहितेत बदल करावे लागतात. चित्रपटातील संवाद, पात्र, घटना किंवा मूळ कथा यांच्यात बदल सुचविले जातात किंवा लेखक स्वतःहूनही पुनर्लेखन प्रक्रियेद्वारे संहितेचे सक्षमीकरण करीत असतो. बहुतेक प्रत्येक लेखन पुनर्लेखन असते. चित्रपटची कथा चित्रपटाची ब्लूप्रिंट असते. जेव्हा तुमची पटकथा एखाद्या मोठ्या प्रकल्पाची भाग बनते तेव्हा चित्रपट निर्माता, चित्रपटातील

कलाकार किवा गुंतवणूकदार पटकथेत बदल सुचवितात. हे बदल कधी कधी किरकोळ असतात तर कधी कधी पूर्णतः कथानकात बदल करावा लागतो. व्यावसायिकदृष्ट्या यश मिळवण्यासाठी अशा बदलाची आवश्यकता असते. सुरुवातीला असे बदल पटकथाकाराला नकोसे असतात व त्याला ते अडचणीचे वाटतात. स्वतःच्या पटकथेच्या प्रेमात पडलेले लेखक ताठर भूमिका घेतात व पटकथेत बदल करण्यास तयार नसतात. परिणामी त्यांना अशा मोठ्या प्रकल्पातून बाहेर पडावे लागते. त्या ठिकाणी दुसऱ्या पटकथाकाराला घेवून चित्रपटाची निर्मिती केल्या जाते. अनेक पटकथाकार सुचविलेले बदल करण्यास तयार होतात. पट कथाकाराने सुचविलेले बदल केल्यास सरावाने त्यास अशा बदलांची सवय होते आणि पुनर्लेखनास तो सहज तयार होत असतो आणि आपल्या पटकथेला चित्रपटासाठी तयार करीत असतो. तसा विचार केला तर पटकथाकार आपल्या स्वतःच्या संहितेचे अनेकवेळा पुनर्लेखन करीत असतो पण अशावेळी त्याने ते स्वतः घेतलेले निर्णय असतात. त्यामुळे त्याला पटकथेत बदल करताना दुःख होत नाही. इतरांनी सुचविलेले बदल त्याला पटतीलच असे होत नाही पण व्यावसायिक यशासाठी त्याला तडजोड स्वीकारावी लागते आणि पटकथेत सुचविलेल्या बदलांचा समावेश करावा लागतो.

पुनर्लेखन ही प्रक्रिया वेदानादाही असते. लेखकाला आपल्याच कथेचा सुरुवातीपासून आढावा घ्यावा लागतो. असे असले तरी लेखकांनी पुनर्लेखनाकाडे सकारात्मकवृत्तीने बघितले पाहिजे. यामुळे लेखकाला आपल्या पटकथेतील बारीकसारीक बाबीवर जसे कथेची संकल्पना, पात्रांची निर्मिती आणि गरज, पटकथेचा फॉर्म, इत्यादीचा परत अभ्यास करण्याची संधी मिळेल आणि तो या संधीचे अथक प्रयत्नांनी सोनं बनवेल.

**पुनर्लेखन प्रक्रियेत दोन मुख्य चरणांचा समावेश होतो.**

- अ) समस्या ओळखणे,
- ब) त्यांना योग्य क्रमाने निश्चित करणे

**समस्या ओळखणे:**

मग समस्या काय आहे?

आपण स्क्रिप्ट पूर्ण केली आहे आणि काहीतरी बरोबर नाही हे आपल्याला वाटणे . परंतु ते काय आहे ते आपल्याला माहिती नाही - याचा आपण एकट्याने शोध घ्यावा. समस्या अशी आहे की एक सुव्यवस्थित स्क्रिप्टचा काही भाग सुचविलेल्या बदलामुळे बदलेल. यापैकी बदलाचा काही परिणाम चांगल्या गोष्टीमध्ये तर काही वाईट गोष्टीमध्ये होईल.

पात्र स्वतःचे जीवन विकसित करतात आणि कधीकधी ते आपल्याला आश्चर्यचकित करतात.

कधीकधी आपल्याला असे आढळते की आपण एकाच वेळी दोन चित्रपट लिहित आहात आणि एक बाहेर काढण्याची आवश्यकता आहे. तर मग आपण आपल्या कथेचे विश्लेषण कसे कराल आणि समस्या ओळखाल .

**प्रथम मोठी मोठी समस्या पहा.**

आता तुम्हाला माहिती आहे की कथा काय आहे? किंवा आपण अद्याप गोंधळलेला आहात? आपण एक संगीतमय चित्रपट लिहित आहात का? किंवा आपण विविध शैल्यांमधून दोन किंवा अधिक फॉर्मच्या कथा लिहित आहात?

**आपणास सुचविलेले बदल करीत असताना खालील संकल्पना करा :**

- कथेत अद्यापही आपण विचारात घेतलेला “एक्स-फॅक्टर” आहे की नाही ? म्हणजे आपणास संकल्पना स्पष्ट आहे किंवा नाही?.
- चित्रपटाचे पोस्टर कशासारखे दिसते?
- हा चित्रपट पाहण्यासाठी तुम्ही पैसे द्याल का?

**संरचना आणि फॉर्म**

- चित्रपटाच्या समाप्तीकडे पहा: या चित्रपटाचा शेवट सकारात्मक किंवा नकारात्मक होणार आहे का?
- कथा समारोप करण्यासाठी कथा योग्यरित्या संरचित केली गेली आहे का?
- आपण निवडलेला फॉर्म कथेचा उद्देश पूर्ण करण्यासाठी योग्य आहे का? म्हणजे आपण ही कथा वेगवेगळ्या फॉर्मच्या माध्यमातून सांगू शकता का ? कथा प्रेक्षकांपर्यंत पोहचविण्यासाठी हा फॉर्म खरोखरच योग्य आहे का ?

**संकल्पना (थीम):**

- मुख्य पात्र चित्रपटाच्या शेवटी काय नैतिक धडा देईल ?
- चित्रपट प्रवासात मुख्य पात्रात एका अर्थपूर्ण पद्धतीने बदल झाला आहे का आणि कसा ? हा बदल आपण पात्राच्या योग्य कृतीद्वारे पद्धतीने टिपला आहे का ?
- आपण लिहिण्यास सुरुवात केल्यापासून आपल्याला असे जाणवते का की कथानकाच्या मध्यवर्ती संकल्पनेत बदल झाला आहे ?

- आपण आपल्या मुख्य पात्राला प्रस्थापित करण्यासाठी/ त्याच्या पात्रांच्या कमतरताना आव्हान देण्यासाठी जे आव्हान कार्य दिले आहे ते पुरेसे आहे का ?

**पात्र :**

- आपण निर्माण केलेले मुख्य पात्र अभिनय करीत आहे कि केवळ प्रतिक्रिया देत आहे?
- पात्रांच्या कृती सत्यतेच्या जवळ आणि विश्वसनीय वाटतात कि केवळ आभासी आणि अविश्वसनीय वाटतात.
- आपण निर्मित मुख्य पात्रापेक्षा उपपात्र किंवा इतर पात्र जास्त आकर्षक आणि मनोरंजनात्मक झाली आहेत का ?
- मुख्य पात्रांच्या प्रेरणा स्पष्ट आहेत का?
- त्याला काय हवे आहे हे आपल्याला माहिती आहे आणि ते मिळविण्यासाठी त्याला काय करावे लागेल? यात स्पष्टता आहे का ?
- आपल्याला माहित आहे की त्याला शेवटी किंवा स्वतःबद्दल काय शोधणे आवश्यक आहे, आणि ते त्याला वेळेत लक्षात येईल की नाही?
- आपण आपले लीड कॅरेक्टर साठी एक मोठे आव्हान सेट करता ज्या आव्हानाचा तो व्यवस्थित सामना करू शकेल कि ते आव्हान तो पेलू शकणार नाही आणि त्यात तो गुरफटून राहील.
- आपणास खात्री आहे की आपण आपल्या मुख्य पात्राला आव्हान देण्यासाठी अन्य योग्य पात्र निवडले आहे ?
- आव्हान आणखी कठीण करण्यासाठी आणखी कमकुवत पात्र निर्माण होऊ शकते का?
- आपण पात्रांच्या समस्या, कमजोरी आणि सर्वात मोठे भयाची तीव्रता वाढू शकता का ?

- लक्षात ठेवा: लीड कॅरेक्टरला काय साध्य करायचंय आणि त्याची नेमकी गरज काय यातील अंतर विरोधकांना आक्रमण करण्यासाठी संधी निर्माण करीत असते.

#### **विरोधक :**

- आपणास माहित आहे की आपला (चित्रपटातील) विरोधक कोण आहे आणि तो त्यासाठी योग्य का आहे?.
- विरोधी पात्र मुख्य पात्रासमोर तगड आव्हान निर्माण करते का ? आणि मुख्य पात्र त्यास कितपर्यंत प्रत्युत्तर देण्यास सक्षम आहे ?
- विरोधी पात्राने मुख्य पात्रांच्या कमकुवतपणाचा पूर्णपणे उपयोग केला आहे का?
- विरोधकांचा पराभव करणे सोपे आहे का?
- विरोधकाने मुख्य पात्रांच्या कमजोरपणाचा कसा पर्दाफाश केला आणि जबरदस्तीने त्याला बदलण्यासाठी परावर्त केले ?
- विरोधकाला चित्रपटाच्या शेवटापर्यंत खूप आव्हानात्मक पद्धतीने सादर केले का आणि शेवटी आपल्याला हवा त्या पद्धतीने प्रेक्षकांचा विश्वास बसेल अशा रीतीने चित्रपटाचा शेवट केला का?
- चित्रपटातील अंतिम संघर्ष समाधानकारक निष्कर्ष प्रदान करतो का?

#### **दुय्यम पात्र :**

- आपल्या कथानकात अनेक दुय्यम पात्र आहेत का ? हा अनेक चित्रपटात वारंवार दोन सीनमध्ये निर्माण होणारा गोंधळ असतो.अनेक दुय्यम पात्र अनेक सीननुसार त्यांना योग्य न्याय दिला नाही तर कथानकात गोंधळ निर्माण होतो व प्रेक्षकांना त्यामुळे कथानक समजण्यास वेळ लागतो.

- प्रत्येक उपकथा मुख्य कथेशी सुसंगत आहे का ? कि तीन्हे मुख्य कथेपासून फारकत घेतलेली आहे ? आणि प्रत्येक उपकथा स्वतंत्रपणे अस्तित्व टिकून आहेत?. चित्रपटाच्या मध्यवर्ती भूमिकेशी उपकथांची सुसंगती असायला हवी.

#### **प्रेक्षक:**

- आपणास याची जाणीव आहे का की कथानकाच्या प्रत्येक टप्प्यावर श्रोत्यांना कसे वाटेल ? आणि का?
- सुरुवातीपासून प्रेक्षकांना कथानकात खिळवून ठेवण्यात आपण यशस्वी व्हाल का ? आणि कसे?
- आपण त्यांना कथानकाच्या शेवटी एक चांगला मेसेज देवू शकता का ?
- कथेत अनेक twist आहेत का ? आणि त्यामुळे कथानकात अनपेक्षित मार्गाने बदल घडतात ?
- आपण कथानकाची परिणामकता साधण्यासाठी सर्व मुख्य नाट्यपूर्ण साधनांचा अवलंब केला आहे का ?.

#### **कथेचा परिणामिकता दाखविणे ?**

- ड्रामॅटिक टेंशन - जेव्हा प्रेक्षक नायक/नायिका/मुख्य पात्राच्या डोळ्यांद्वारे कथा पहातात.
- सस्पेंस (नाट्यमय विडंबना) - जेव्हा प्रेक्षकांना पात्रांपेक्षा जास्त माहित असते, त्यांच्याबरोबर सहानुभूती असते आणि त्यामुळे त्यांना पात्रांची दया येते. नाटकांमध्ये त्यांची भीती असते किंवा कॉमेडीमध्ये त्यांच्या अस्वस्थतेची अपेक्षा केली जाते.

- **गृढ** - जेव्हा प्रेक्षकांना पात्रांपेक्षा कमी माहिती असते (उदा. मूळीच्या सुरुवातीस आणि प्रत्येक सीनच्या सुरुवातीस)
- **आश्चर्यचकिता** - कथा, हेतू आणि गरजेनुसार आपण पात्रांची निर्मिती केली आहे. जेणेकरून ते आश्चर्यचकित आणि प्रकट करण्याच्या मार्गानी इतर गोष्टी करू शकतात जे आपल्या कथा उत्साहवर्धक आणि रीफ्रेश करतील.
- **जेनरी विडंबन** - जेव्हा प्रेक्षकांना पात्रांपेक्षा जास्त माहिती असते कारण त्यांना माहित असते की पात्र चित्रपटात कोणत्या सीनमध्ये आहे आणि कोणत्या नाही. नाट्यमय साधनांच्या विशिष्ट मिश्रणाचा वापर करून विडंबन पद्धतीने कथानकाची रोमांचीकता(थ्रील्लर) वाढविण्यात येते. बन्याचदा स्पैसेपेक्षा नाट्यमय तणाव, आश्चर्य आणि शैली व्यंग्य यावर रोमांचीकता(थ्रील्लर) अधिक अवलंबून असते.
- **सिनेमेटिक विडंबन** - एका अर्थाने प्रेक्षकांना चित्रपटाच्या तुलनेत पात्रांपेक्षा नेहमीच अधिक माहित असते आणि पात्र वास्तवदर्शी असतात. प्रेक्षक आपल्या कथेशी कसे संबंधित असतील याबद्दल आपल्याला स्पष्ट दृष्टी हवी किंवा आपण त्यांना चित्रपट पहात असल्याची आणि त्यांना सिनेमॅटिक अनुभवापासून दूर ठेवल्याची म्हणजे ते केवळ चित्रपट बघत आहेत याची कल्पना वारंवार द्यावी. अनेक वेळा (विशेषत: विनोदी) चित्रपटांचा संदर्भ खूप प्रभावी असू शकतो, परंतु संदर्भ अयोग्यरित्या वापरल्याने प्रेक्षकांच्या आनंदाचे खरोखर नुकसान करू शकतात.

## **प्लॉटिंग:**

- प्लॉटिंग विश्वासार्ह आहे का?. कथेचा प्लॉट महत्वाचा असून यामध्ये अनेक गोष्टीचा बारकाईने अभ्यास करण्यात यावा. प्लॉट मध्ये अनपेक्षित twists आणि वळणे खूप आहेत का आणि ती बोधीकदृष्ट्या समजायला सोपी आहेत का याचा लेखकाने विचार करायला हवा. कथानकाच्या दृष्टीने twists आणि वळणे अपेक्षित आहेत का? यावरही विचार करण्यात यावा. प्लॉट मध्ये एकेक मुद्दा सोप्या व सोयीस्कर पद्धतीने आणि प्रभावशाली पद्धतीने मांडण्यात आलाय का? आणि नसेल तर त्यावर मेहनत घेणे आवश्यक असते. प्लॉट मध्ये प्रत्येक पात्रांचा सीननुसार योग्य न्याय देण्यात आला आहे का? एखादे पात्र खूप प्रभावशाली आणि दुसरे पात्र प्रभावरहित असे तर झाले नाहीना याची आभास करून लेखकाने पात्रांची योग्य गुंफण करायला हवी. प्लॉट लिहिताना सर्वांगी विचार करून कथेला योग्य न्याय मिळेल या पद्धतीने पटकथा लिहिली पाहिजे.

## **क्रम आणि दृश्ये :**

- आपण प्रत्येक सीनचा उद्देश ओळखू शकता का ?
- प्रत्येक सीनचा अनुक्रम एकमेकावर आधारित आहे का ? याच उत्तर लेखकाकडे असले पाहिजे?
- आपण निर्माता किवा दिग्दर्शकला याबाबत आवश्यकतेनुसार सतर्क केले आहे का?

- आपण एखाद्या प्रश्न निर्माण केला आहे , त्यावर युद्ध होईल आणि त्या प्रश्नाचे निराकरण होईल आणि त्यानंतर दुसरा नवीन प्रश्न, त्याची सोडवणूक आणि हा क्रम अशा पद्धतीने विकसित करण्यात आला आहे का ?
- आपले दृश्ये सक्रिय प्रश्नांसह अनुक्रमांमध्ये योग्यरित्या जोडलेले आहेत का ? आपण प्रत्येक सीनगणिक आणि पात्रांच्या कृतीतून कथा पुढे सरकवण्यास पुरेशी उपाययोजना आखली आहे का ?
- प्रत्येक सीनमध्ये सुरुवात, मध्य आणि शेवट आहे का ?
- सीन नैसर्गिकरित्या निर्माण झाले आहेत कि ते आश्चर्यकारक वा अपेक्षित मार्गानी विकसित झाले आहेत ?
- उप-प्लॉट्स निर्माण झाले असतील तर त्यांचा मुख्य प्लॉटशी व्यवस्थित सांगड घातली आहे का?

#### **कार्य आणि दृश्यमान शैली:**

- आपण आपल्या व्हिज्युअल शैलीवर नियंत्रण ठेवता का ?
- आपण काल्पनिक कॅमेराद्वारे संपूर्ण कथा पहात आहात का ? किंवा आपण स्टेजसाठी लिहित आहात?
- कथा दाखविण्याची पद्धत मनोरंजक आहे का?
- आपण लोकांना अपेक्षित कथानक पोहचू इच्छिता कि लेखकाला आपल्या कथेद्वारे जे सांगायचं आहे त्यानुसार पटकथा लिहित आहात ?.चित्रपटगृहातून बाहेर पडल्यावर प्रेक्षकांना चित्रपटाच्या सुरुवातीला पडलेली प्रश्नांची उत्तर मिळालीत का याच पटकथाकाराने प्रकर्षाने विचार करावा.

### **संवादः**

- संवाद हा आवश्यक आहे का आणि तो पात्रांच्या कृतीचे समर्थन करतो का कि संवाद कृतीच्या विरोधात आणि समर्पक नाहीत हे बघितले का ?
- संवाद उच्चार स्पष्ट आहेत कि नाकातल्या नाकात बोलण्यासारखे वाटतात ?
- संवादाचा आवाज सीनशी सुसंगत आहे का?
- पात्रांची भाषा एकमेकांपेक्षा वेगळी आहे का ?
- काही पात्रांच्या तोंडी खूप जास्त संवाद आहेत आणि त्या तुलनेत इतरांच्या तोंडी अत्यल्प संवाद आहेत का ?
- आपण फक्त मुख्य पात्रांना सर्वोत्कृष्ट संवाद देत आहात का ? इतरांना खूप संवाद कमी असतील तर इतर पात्रांचा प्रभाव कमी होईल आणि परिणामतः चित्रपटातील पात्रांना योग्य न्याय मिळणार नाही.

### **बजेटः**

- चित्रपटाच्या शुटींग साठी आपण निवडलेली ठिकाणे (Locations) योग्य आहेत का? खूप खर्चिक नाहीतना ?
- कथा थोड्या प्रमाणात सांगितली जाऊ शकते, किंवा ती मोठ्या प्रमाणात सांगितली जाऊ शकते? म्हणजे मोठा सिनेमा कि लघुफिल्म?
- अनावश्यक property चा वापर तर करीत नाहीत ना ?

कृती:

१. पुनर्लेखन काय आहे?

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

२. पुनर्लेखनाचे मूलभूत तत्व समजावून सांगा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

३. एखादी चांगली फिल्म पहा आणि त्या चित्रपटाच्या संवाद पुन्हा लिहा

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

४. आपल्या पसंतीची कोणतीही फिल्म घ्या आणि पटकथा पुन्हा लिहा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

## **प्रात्यक्षिक ११ : लघु पटकथा: शिका आणि स्वयंप्रकाशित व्हा**

**उदिष्टे:**

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल .

- लघु पटकथा लेखन कसे करावे हे कळेल.
- लघु पटकथा लेखन दृश्य मांडणी कशी करतात हे कळेल.
- लघु पटकथा लेखन करता येईल.

**साहित्य:** पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

**विषय संकल्पना:**

**दृश्य १ ( तमाशा/लोककलाकेंद्र / रात्र / EXT )**

( पोटासाठी नाचते मी मला पर्वा कोनाची हे गाण आपल्या कानी पडते .. एका तमाशाच्या/ लोक कलाकेंद्राच्या आवारातील गेटवर असलेल्या नामफलकावर कॅमेरा काही क्षण रोखल्या नंतर..तमाशाच्या गेटमधून काही प्रेक्षक आतमध्ये जातानाचे दृश्य आपण पाहू शकतो...कॅमेरा तमाशा आवारातील आणखी काही दृश्यटिप्तो जसे लहान मुलं व त्यांना सांभाळणाऱ्या वयोवृद्धमहिला,,बाजूला असलेल्या स्वयंपाकघरातील स्वयंपाक करतानाची लग्बग...तमाशातील आवारातील पानटपरीवर काही पुरुष सिगरेट घेताना तर काही सिगरेट ओढतानाचा धूर... )

कट टू

दृश्य २ ( दिवाणखाना /रात्र / INT )

( कांचन/ कांचनचे साथीदार/प्रेक्षक )

( कॅमेरा धुरावरून थेट दिवाणखान्याच्या बोर्डवर ...बोर्डवर सुप्रसिद्ध नृत्यागना कांचन आपल्या इतर दोन साथीदारनीसह पोटासाठी नाचते मी मला पर्वा कोनाची या लावणी गाण्यावर नववारी वेशात नृत्य सादर करताना दिसते..तिच्या मागच्या लाईनमध्ये आणखी काही नृत्यागना नाचताना आपण पाहू शकतो...स्टेजच्या दोन बाजूला समोरासमोर पेटी व तबलावादक तबला वाजवताना आपण पाहू शकतो...स्टेजच्या समोर खुर्च्यामध्ये प्रेक्षक लावणीचा मनमुराद आनंद घेताना दिसताहेत ....काही प्रेक्षक बसल्या जागी उभे राहून शिट्या वाजून तर काही टोप्या हवेत उडवून नाचतानाचे दृश्ये आपण पाहू शकतो... कॅमेरा कधी कांचनचा closeup दाखवितो तर कधी प्रेक्षकांचा उंदंड उत्साह दाखवताना .....

कट टू

दृश्य ३ (लोककलाकेंद्राचा परिसर / रात्र / EXT/INT )

( कांचनची वयोवृद्ध आई / तीचे दोन लहान मुलं -, मोठ मुलगा राहुल ८-९ वर्षाचा तर लहाना अजय एक दीड वर्षाचा )

(EXT) दिवाणखान्याच्या बाजूला असलेल्या  
नृत्यांगानाच्या राहण्याच्या खोल्यामधून एक लहान मुलाचा  
मोठमोठ्याने रडण्याचा आवाज येतो...कॅमेरा दिवाणखान्याच्या  
बोर्डवरून दिवाणखान्याच्या बाजूला असलेल्या या खोल्यावर ....

(INT) कांचनच्या वयोवृद्ध आईच्या मांडीवर अजय भुकेने व्याकूळ होवून मोठमोठ्याने रडताना...कांचनची वयोवृद्ध आई त्याचे सांत्वन करताना..राहुलही स्वतःःच्या हातातील खुळखुळा अजयच्या डोळ्यावर त्याला दिसेल अशा पद्धतीने खूळखुळा वाजवून त्याला समजावण्याचा, शांत करण्याचा कसोशीने प्रयत्न करताना आपण पाहू शकतो...कानावर अजूनही दिवाणखान्यातील लावणीचा आवाज येतोय....काही केल्या अजय शांत होत नाही...आई व राहुल बैचन होताना..काय करावे ते त्यांना समजत नाही..त्यांची अगतिकता वाढताना...राहुल आईच्या म्हणजे त्याच्या आजीच्या डोळ्यांकडे बघतो....त्याला आजीचा इशारा कळतो....तो त्या ठिकाणाहून बाहेर पडताना...अजयचा रडण्याचा आक्रोश आकाश भेदताना .....

कट टू

दृश्य ४ ( दिवाणखाना /रात्र / INT )

( कांचन/ कांचनचे साथीदार/प्रेक्षक/राहुल )

कॅमेरा परत दृश्य २ मधील दृश्य जशाच तसे टिपताना...राहुल धावतच कांचन नाचत असलेल्या दिवाणखान्याकडे येतो...त्याला अजय खूप रडत असल्याचा निरोप कांचनला द्यायचा

असतो...तो दिवानखान्याला असलेल्या खिडकीतून आत डोकावतो..पण त्याला खूप मोठा धक्का बसतो...कांचनला रुपया घेण्याच्या बहाण्याने एका प्रेक्षकाने बोलावलेले असते...प्रेक्षकाच्या हातातील एक रुपयाची नोट घेताना तिला खूप प्रयत्न करावी लागत आहेत..प्रेक्षकाने एका बाजूने नोट घडू पकडली आहे तर दुसऱ्या बाजूने कांचनने ..तो प्रेक्षक सहजासहजी रुपया सोडत नाही.कांचनचा रुपया टेण्याच्या बहाण्याने हात पकडणे..अश्लील वाटावी अशी विक्षिप्त चाळे तो तिच्याशी करीत आहे .. .बाजूचे इतर प्रेक्षकही या तिच्या छेळवनुकीचा आनंद घेताना..काही प्रेक्षक सिगारेटचा धूर तिच्या तोंडावर सोडताना...काही शिट्या वाजवताना...काही नाचताना.....हे सर्व राहुल खिडकीतून बघत असतो...आपल्या आईची अशी कुचंबना होताना तो बघत असतो...त्याला प्रचंड राग येतो..तो राग त्याच्या चेहऱ्या वर आपण स्पष्ट पाहू शकतो....कँमेरा राहुलच्या चेहऱ्याची closup घेताना ....

कट टू

दृश्य ५ ( दिवाणखाना /रात्र / INT )

(राहुल )

(Montage) राहुलला प्रेक्षकांचा प्रचंड राग ..त्याचे डोळे रागानं लालबुंध झालेली...तो खिडकीच्या गजाना दोन्ही हातानी जोरात पकडून ती तोडण्याचा प्रयत्न करताना ....रागाने त्याचे पूर्ण शरीर थरथर होताना आपण पाहू शकतो...कँमेरा हळू हळू त्याच्या डोळ्यावरून बाजूला उऱ्या केलेल्या बांबूकडे जातो..राहुल त्या बांबू च्या काठीकडे झेपावतो..गडबडीने बांबू हातात घेतो..झाप झाप

धावत..दिवाणखान्याच्या              दरवाज्याजवळ    पोहचतो...तो    त्या  
प्रेक्षकांना बदळून काढणार असे दिसतय ...त्याच्या चेहऱ्यावरील  
भावमुद्र तश्याच अधोरेखित करतात ...

कट टू

दृश्य ६         ( दिवाणखाना /रात्र / INT )

(राहुल /शाळा )

कॅमेरा कांचन व प्रेक्षकांच्या हुल्लडपनावर...राहुल हातातील काठी घेवून या  
हुल्लडपनावर तुटून पडणार असे वाटत असताना...कॅमेरा फटाफट राहुलची  
शाळा...शाळातील भिंतीवर असणारी वेगवेगळ्या थोर नेत्यांच्या फोटोवर..त्यातील  
सूटबुटातील बाबासाहेब आंबेडकरांचा हातात भारताचे संविधान असलेल्या फोटोवर  
...परत राहुल..राहुलच्या हातातील काठीवर...परत बाबासाहेबांवर...परत  
काठीवर...बाबासाहेबांवर..काठीवर....बाबासाहेबांवर..काठीवर.....चित्रित  
होताना...शेवटी राहुल खाडकन हातातील काठी दरवाज्यात फेकून देतो..व माघारी  
फिरतो...

कट टू

दृश्य ७         ( परिसरातील खोली /रात्र / INT )

(राहुल /कांचनची आई/अजय )

राहुल घराकडे परत येतो...त्याच्या मनात प्रचंड राग असतो...अजय  
कांचनच्या आईच्या मांडीवर एव्हाना शांत होवून झोपलेला असतो...आई त्याला

पदराने हवा घालीत असते...राहुल त्या दोघांकडे एक क्षण कटाक्षाने बघतो...बाजूला असलेली संदूक उघडतो...त्यातून पुस्तक काढतो...एका कोपन्यात जावून अभ्यास करतो...अभ्यास करीत असताना त्याला परत परत दिवाणखान्यातील कांचनचा छळ होतानाची दुर्घट आठवतात...राहुल अस्वस्थ होतो आणि पुन्हा अभ्यासात डोकं घालतो...कॅमेरा भिंतीवर असलेल्या घडयाळा वर...त्यात रात्रीचे दोन वाजून गेल्याचे आपणास दिसते...कॅमेरा भिंतीवरील कॅलेंडरवर...कॅलेंडरची महिने..वर्ष बदलताना....राहुल अभ्यास करताना...त्याला परत आईची दृश्य आठवतात...तो परत तावातावाने अभ्यास करताना...परत कॅलेंडरवर ...हे कालचक्र असे चित्रित होताना....

## कट टू

दृश्य C ( शाळा /सकाळ / INT )

(राहुल /राहुलच्या शाळेतील शिक्षक /विद्यार्थी )

कॅमेरा कॅलेंडर वरून थेट राहुलच्या शाळेत..राहुलचा जाहीर सत्कार होतानाचे दृश्य...कॅमेरा सत्कार समारंभातील स्टेजच्या प्रथमदर्शनी लावलेल्या फलकावर....राहुल दाहवीच्या परीक्षेत बोर्डात पहिला आल्याने त्याच्या सत्काराचा फलक ..कॅमेरा ते टिपतो ..नंतर टाळ्यांच्या प्रचंड आवाजात राहुलचा शाळेचे मुख्याधापक सत्कार करताना...राहुल मुख्याधापक व इतर शिक्षकांना कंबरेत वाकून नमस्कार करतो...टाळ्यांचा गजर चालू...राहुल स्टेजवरील माईक हातात घेतो.....बोलायला लागतो.....

राहुल

“ मी रागाच्या भरात पुस्तकाएवजी काठी हातात घेतली असती तर...मी आज आपणासमोर सन्मानाने उभा राहू शकलो नसतो.” ....टाळ्यांचा पुन्हा प्रचंड कडकडाट.....!

(समाप्त)

**कृती:**

१. “शिका आणि स्वयंप्रकाशितव्हा” या पटकथा लेखनात पटकथाकाराने कोणत्या मुख्य विषयाची निवड केली आहे आणि त्यांनी या लघु पटकथेतून कोणता संदेश प्रेक्षकांना देण्याचा प्रयत्न केला आहे ? या विषयी माहिती द्या .
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
- 
-

2. तुम्ही एका शैक्षणिक चित्रपटासाठी लघु पटकथा लिहा आणि पटकथेच्या शेवटी पटकथेतील विषय निवडण्यामागील आपली भूमिका विशदकरा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**अवलोकन :**

**निष्कर्ष :**

**मूल्यमापन :**

## **प्रात्यक्षिक १२ : लघु पटकथा: देवाला भेद मान्य नाही तर**

**उदिष्टे:**

हे प्रात्यक्षिक केल्यावर, आपणास खालील माहितीचे आकलन होईल .

- लघु पटकथा लेखन कसे करावे हे कळेल.
- लघु पटकथा लेखन दृश्य मांडणी कशी करतात हे कळेल.
- लघु पटकथा लेखन करता येईल.

**साहित्य:** पेन,कागद,(संगणक/ Laptop)

**दृश्य १ ( बाजारपेठ/दिवस / EXT )**

( आधी वन्दू तुळा गण राया...सुखहर्ता दुखःहर्ता वार्ता.....अशी वेगवेगळ्या गणपती आरतीचा सुमधुर आवाज आपल्या कानी पडत आहे. एका बाजारपेठेत रस्त्याच्या दुतर्फी बाजूने गणपती उत्सवासाठी आकर्षक व सुंदर गणपतीच्या मूर्ती विकण्यासाठी ठेवलेल्या दिसत आहेत. काही दुकानांवर ग्राहकांची वर्दळही दिसत आहे.मोठमोठ्या ट्रक मधून आणखी काही मुर्तीया दुकानामध्ये उत्तरविल्या जात आहेत.एकंदरीत गणपती उत्सवाचे वातावरण निर्माण झाल्याचे कॅमेराने टिपलेल्या दृश्यात चिनीत होते.)

**कट टू**

**दृश्य २ : ( बाजारपेठ/दिवस / INT )**

( सुनिता एक १०-१२ वर्षांची मुलगी /बाजारपेठ )

( कॅमेरा बाजारपेठेचे चित्र टिपता टिपता एका १०-१२ वर्षांच्या मुलीच्या पाठमोरा बाजूचे दृश्य टिपताना...मुलीच्या अंगावर मळकटझगा आहे..तिच्या वेन्या विस्कटलेल्या आहेत...पायात चप्पला नाहीत ....तिच्या एका हातात छोटस गाठोडं आहे...ती ते गाठोडं घेवून रस्त्याच्या दुतर्फा असलेल्या मुर्तींकडे बघत बघत जात आहे....कॅमेरा तिच्या पाठमोर्या बाजूने आता हळू हळू वळत समोरील बाजूने तिचा चेहेरा चित्रित करताना...कॅमेरा कधी मुर्तीयावर तर कधी बाजारपेठेतील इतर व्यक्तीं टिपत असताना पुन्हा पुन्हा या मुलीच्या चालण्याकडे ...कधी तिच्या चेहेरा टिपताना .....मुखगी बाजार पेठ ओलांडून पुढे पुढे जात आहे....कॅमेरा तीचे हे चालणे रस्त्याच्या शेवट पर्यंत टिपत आहे.....)

## कट टू

दृश्य ३ : (एका टोलेजंग इमारतीचा परिसर / दिवस /INT )

(सुनिता /तिचे वडील-महादू )

सुनिता एका हातात गाठोडं घेवून काही तरी गुणगुणत बाजारपेठेकडून एका टोलेजंग इमारतीच्या बाजूला मूर्ती बनवणाऱ्या तीच्या वडिलाकडे येते. तिचे वडील एक मोठा दगड छन्नी हातोड्याच्या सहाय्याने कोरीत असतात.त्याच्या बाजूला अनेक दगड पडलेली कॅमेरा टिपतो... सुनिता तिच्या बापाजवळ जाते..बापाचे तिच्याकडे लक्ष्य नसते..महादू मुती कोरण्यात मग्न असतो..ती बापाला आव्वाज देते

सुनिता

बा ..एं बा ..

महादूचे लक्ष्य विचलित होते.तो त्या आवाजाने मान वर करून बघतो. सुनिता आल्याचे त्याच्या लक्षात येते. महादूचे पूर्ण शरीर कष्टाच्या घामाने ओलेचिंब झालेले असते..तो हातातील छनी व हातोडा बाजूला ठेवतो.कपाळावरील घाम हाताने पुसतो..नंतर बाजूला

बसतो..एका जुन्या टॉवेल ने अंग पुसतो. सुनीताला बसायला सांगतो. थकलेल्या आवाजात बोलतो...

महादू

सुने का ग उशीर केला.

सुनिता

काय नाही बा..रस्त्याला खूप गणपतीबाप्पाच्या मूर्तीया होत्या..त्या बघत बघत आले..पण जावू दे बा..तू भाकर खा ..तुला भूक लागली असल ..पण बा मायनं सांगितलाय कि भाकरी सोबत लाल चटणी आन कांदा दिलाय..आज कोरड्यासासाठी घरात काहीच शिल्लक नाय म्हणून...

महादू ते ऐकून त्यावर काहीच प्रतिक्रिया देत नाही....शरीराचा घाम पुसत राहतो...

महादू घाम पुसून झाल्यावर बाजूला असलेल्या तांब्या तोंडाला लावतो व ढसा ढसा त्यातील पाणी पितो.नंतर सुनीताने आणलेले गाठोडे सोडतो व त्यातील कांदा घेतो..स्वतःच्या हाताच्या बुकीने तो कांदा फोडतो ..नंतर चटणी व भाकर खायला लागतो...

कट टू

दृश्य ४      (एका टोलेजंग इमारतीचा परिसर / दिवस/INT )

(सुनिता /तिचे वडील-महादू /सुनीताची मैत्रीण-विनिता/विनीताचे वडील )

महादु भाकर खाताना...सुनिता महादू कोरीत असलेल्या मूर्तीला न्याहाळून बघते...कॅमेरा त्या मूर्तीचा closup घेताना.. ती अर्धवट अवस्थेत असलेली सुबक मूर्ती..महादेवाचं रूप धारण करणार अस दिसतंय..सुनिता ती अर्धवट मूर्ती घडताना बघून खूप खुश होते....ती महादुला विचारते..

## सुनिता

बा..किती छान मूर्ती बनवतोस....महादेवाची ना रे ही मूर्ती....

महादूऱ् होकार्थी मान हलवून हो म्हणतो....

एवड्यात टोलेजंग इमारतीतून बाहेर पडलेली एक आलिशान कार सुनिता व महादू  
बसलेल्या ठिकाणाजवळून जावू लागते...कार मधील मुलगी विनिता कारच्या खिडकीमधून  
बघत असते...कार पुढे धावत असताना विनिताला रस्त्याच्या बाजूला तिची मैत्रीण सुनिता  
दिसते. ती तिच्या पप्पाला गाडी थांबवण्यास सांगते...

विनिता कारच्या खिडकीतूनच सुनीताला आवाज देते....सुनिता ...सुनिता...

सुनिता कार च्या खिडकी जवळ येते.ती येथे कशी काय म्हणून विनिता विचारते.

## विनिता

सुनिता , तू इथे काय करतेस..

## सुनिता

अग विनिता मी माझ्या बाबाला भाकर द्यायला आले होते..

सुनिता महादुकडे हात करत विनिताला सांगते..

## सुनिता

ते बसलेत ना तो माझा बाप हाय...देवाच्या मुर्तीया बनवतोय....

कॅमेरा महादू व त्याने तयार केलेल्या मुर्तीयांवर ...

## विनिता

व्वा काय सुन्दर अप्रतिम मूर्तीया बनवल्यात....(ती तिच्या वडिलांना म्हणते) ए  
डॉऱ्डू आपण ती मूर्ती घेवू या कारे..फार सुंदर मूर्ती दिसतेय...आपल्या नवीन  
बंगल्यात शोभून दिसेल...चल ना डाङू ..मूर्ती घेवू या ...

विनिता खूप आग्रह करते.विनीताचे वडील व विनिता दोघेही कारच्या बाहेर  
येतात....

कट टू

दृश्य ५ (महादूचे मूर्ती बनवण्याचे ठिकाण / दिवस/INT )

(सुनिता /तिचे वडील-महादू /सुनीताची मैत्रीण-विनिता/विनीताचे वडील )

सुनिता, विनिता व तिचे वडील महादुकडे येतात...कॅमेरा महादूने बनवलेल्या  
मुर्त्यावर...मूर्तीया फार सुन्दर व आकर्षक आहेत...त्यातील एक मोठी महादेवाची मूर्ती  
विनीताचे वडील विकत घेतात..महादुला त्या बदल्यात काही रुपये देतात..महादू मूर्तीला  
कागदाने गुंडाळतो नंतर महादू कारचे दार उघडून ती मूर्ती कारमध्ये ठेवतो. हात जोडून  
निघून जातो....विनिता व तिचे वडील गाडीत पूर्वीच्या आपपल्या जागी जावून  
बसतात...विनिता कारच्या खिडकीतून बोलते....

विनिता

अगं सुनिता येत्या सोमवारी आमच्या नवीन बंगल्यात या मूर्तीची मोठ्याप्रमाणात  
प्राणप्रतिष्ठा स्थापना करणार आहोत ..तुला मी शाळेत तिथिला पत्ता देते..तू न विसरता  
यायचे बर का मूर्ती स्थापनेला...

सुनिता होकारार्थी मान हलवते.....अलिशान गाडी निघून जाते...विनिता सुनीताला बाय  
बाय करते व सुनिताही विनिताला ....

कट टू

दृश्य ६ ( विनिताचा अलिशान बंगला /दिवस / INT )

(विनिता/ विनीताचे आई वडील/कार्यक्रमासाठी आलेले पाहुणे/सुनिता )

कॅमेरा विनिताच्या अलिशान बंगल्यावर....बंगल्यावर लाईटमाळा अंथरलेल्या आपल्याला स्पष्ट दिसताहेत..मूर्तीच्या प्राणप्रतिष्ठा स्थापनेसाठी अनेक भाविक, विनीताचे नातेवाईक , मित्र मैत्री , भटजी इत्यादी..उपस्थित आहेत...बंगल्याच्या प्रथमदर्शनी भागात एक संगमरवरी छोटे पण आकर्षक व टुमदार मंदिर ..त्या मंदिरात महादुकडून विकत आणलेली शिवशंकराची मूर्ती स्थापन्न केलेली आपणास दिसू शकते..भटजी व विनीताचे वडील .भटजी काहीतरी मंत्र त्या मूर्ती समोर म्हणताहेत...भटजीच्या दोन्हीला बाजूला विनिता, विनीताचे त्याच्या पाठोपाठ आई वडील इत्यादी...उभे आहेत...पूजा चालू आहे..पण विनीताचे सर्व लक्ष्य दाराकडे असते...ती सुनीताची वाट पाहत असते...

कट टू

दृश्य ७ ( विनिताचा अलिशान बंगला /दिवस / INT )

(विनिता/ विनीताचे आई वडील/कार्यक्रमासाठी आलेले पाहुणे/सुनिता )

कॅमेरा closeup मध्ये शिवशंकराची मूर्तीवर...तर कधी विनिताच्या चेह-यावर ..सुनीताची नजर काही तरी शोधत आहे हे तिच्यावर कॅमेराने टिपलेल्या दृश्यात स्पष्ट दिसते.....कॅमेरा हळू हळू दरवाज्याकडे...दरवाज्याच्या एका कोपऱ्यात सुनिता उभी आहे...तिला बघून विनिता पळत पळत येते....तिच्या हाताला धरून तिला मंदिराकडे घेवून जातानाचे चित्र...अजून त्या दोघी मंदिरापर्यंत पोहचलेल्या नाहीत...सुनीताच्या हाताला धरून विनिता तिला मंदिराकडे आणताना विनीताचे वडील बघतात आणि क्षणाचाही विलंब न लावता पूजा सोडून धावत विनिताकडे येतात...सुनीताचा हात विनिताने धरलेला असतो...सुनीताचा हात विनिताच्या हातातून जोरात बाजूला काढत विनीताचे वडील सुनीताला परत जोरात ओढत ओढत आणून बंगल्याच्या दाराबाहेर सोडतात. सुनिता निमुटपणे दाराबाहेर काही क्षण उभी राहते व नंतर तिथून निघून जातानाचे दृश्य आपण बघू शकतो.....विनिताला रागाने डोळ्याच्या व हाताच्या इशाऱ्याने

मंदिराकडे जाण्यास सांगतात...वडिलाच त्वेष व राग बघून ती मंदिराकडे जाण्यास निघते पण विनितालाही तिच्या बापाच्या या कृत्याचा फार राग येतो..ती रडत रडत रागाने मंदिराकडे न जाता बंगल्याच्या आत मध्ये निघून जाते...तिचे हे रडत रडत निघून जाण्याने सर्व उपस्थित क्षण भर अस्वस्थ होतात... विनीताची आई विनिताच्या पाठोपाठ तिला समजवण्यासाठी जाताना.....

## कट टू

दृश्य ८ ( अलिशान बंगल्यातील एक रुम /दिवस / INT )

(विनिता/ विनीताचे आई )

विनिता एका सोफ्यावर पालथ पडून जोरजोरात रडत आहे...तिची आई तिच्या पाठोपाठ येते व तिला समजवण्याचा प्रयत्न करते...विनिता तरीही शांत होत नाही...

## विनिता

आई, डाढू असा का वागला..मी माझ्या मैत्रनीला मुद्दामहून या कार्यक्रमासाठी बोलवले होते आणि त्याने तिला हाताला धरून बंगल्याबाहेर हाकलून दिले...का आई का...? सांग मला... असे डाढू का वागला....

विनिताची आई तिचे डोक्ले पुसत पुसत सांगते.

विनिताची आई

विनिता , सुनीताचे वडील वडारकाम करतात ते खालच्या जातीतील आहेत..म्हणून तुझ्या डाढूने तिला मंदिराच्या पूजे बाहेर काढले...

विनिता

आई , जात म्हणजे काय ग ?

विनिताची आई

व्यक्ती जे काम करतात त्या वरून त्याची जात ठरते...विनीताचे वडील दगड फोडून मुत्या बनवतात...म्हणून त्यांना वडार म्हणतात...वडार हि खालची जात ..खालच्या जातीतील लोकांनी अशा धार्मिक कार्यक्रमात लुडबुड करू नये . देवाला ते आवडणार नाही..

विनिता

व्वा आई व्वा ...सुनीताचे वडील दगड फोडतात...तो कोरतात ...आणि त्यांच्या हातांनी सुंदर सुबक देवाला निर्माण करतात ..एका अर्थांनी तेच देवाला जन्माला घालतात. मग त्या देवाला हा भेद मान्य नाही तर मग आपण का करतो... ?

(समाप्त... )

कृती:

- “देवाला भेद मान्य नाही तर” या पटकथा लेखनात पटकथाकाराने कोणत्या मुख्य विषयाची निवड केली आहे आणि त्यांनी या लघु पटकथेतून कोणता संदेश प्रेक्षकांना देण्याचा प्रयत्न केला आहे ? या विषयी माहिती द्या .

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

2. तुम्ही एका सामाजिक चित्रपटासाठी लघु पटकथा लिहा आणि पटकथेच्या शेवटी पटकथेतील विषय निवडण्यामागील आपली भूमिका विशदकरा.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**अवलोकन :**

**निष्कर्ष :**

**मूल्यमापन :**